Author
Jain Hemant Kumar Lodha
Mobile: 9325536999
Email: lodhah@gmail.com
Website: http://www.hemantlodha.com/

Publisher
Avisha Prakashan
84, Avisha, Jaitvan,
Shastri Layout, Nagpur- 25
Mobile: 9373271400
Email: aavinashbag@gmail.com

Copyright: Author
Edition: 1- 2021
Print Prize: 300
ISBN: “978-93-5437-756-3“

About Author

Mr. Hemant Kumar Lodha (Jain), a chartered accountant by profession is an avid reader whose library interests include philosophy, spirituality, relationship building, leadership skills & management skills. Born in Jodhpur, to a respected family of limited means, he has been all over the globe before settling in Nagpur in 2002.

He has authored many books such as ‘Words of Wisdom’, ‘Nectar of Wisdom’, ‘Shrimad Bhagwat Geeta Roopkavita’, ‘Ashtavakra Mahageeta Roopkavita’, ‘Kahi Ankahi’, ‘Samansuttam’, ‘Chankya Niti’ ‘A to Z Entrepreneurship’ ‘A to Z of Leadership’ ‘5 Elements of Organizational Excellence’.

Being socially active, he is associated with several organizations and has founded “Helplink Charitable Trust” with a motto to LINK THE NOBLE AND THE NEEDY, mainly working in the field of education for deprived children.

He is presently working as a Managing Director of SMS Envocare Limited, a group company of SMS Limited.

He can be easily reached at www.hemantlodha.com

Forward…

Dear Readers

Tattvarthsutra is originally written by Acharya Uma Swami in Sanskrit around AD 2nd century. It has 350 sutra arranged in 10 chapters. Hindi and English translation is done by many scholars and available in print books and online on internet. To understand it in more depth I have translated in simple Hindi Doha. Earlier I have translated Bhagvad Geeta, Astavakra Geeta and Samansuttam in Hindi Doha. Translation from one language to another can never give 100% understanding of original work so I seek forgiveness for any mistake in doing so.

I express my sincere thanks to Shri Avinash ji Bagade who taught me how to write Doha and also edited each and every Doha in the book.

Jain Hemant Lodha
Nagpur
5th Jan, 2020

तत्त्वार्थ सूत्र

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

तत्त्वार्थसूत्र, जैन आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित एक जैन ग्रन्थ है। इसे 'तत्त्वार्थ-अधिगम-सूत्र' तथा 'मोक्ष-शास्त्र' भी कहते हैं। संस्कृत भाषा में लिखा गया यह प्रथम जैन ग्रंथ माना जाता है। इसमें दस अध्याय तथा ३५० सूत्र हैं। उमास्वामी सभी जैन मतावलम्बियों द्वारा मान्य हैं। उनका जीवनकाल द्वितीय शताब्दी है। आचार्य पूज्यपाद द्वारा विरचित सर्वार्थसिद्धि तत्त्वार्थसूत्र पर लिखी गयी एक प्रमुख टीका है।

Wikipedia on Tattvarthasutra

Tattvartha Sutra (also known as ***Tattvarth-adhigama-sutra*** or ***Moksha-shastra***) is an ancient Jain text written by *Acharya* Umaswami (Umaswami), sometime between the 2nd- and 5th-century AD. It is one of the Jain scriptures written in the Sanskrit language.The term *Tattvartha* is composed of the Sanskrit words tattva which means "reality, truth" and *artha* which means "nature, meaning", together meaning "nature of reality".

The Tattvartha Sutra is regarded as one of the earliest, most authoritative texts in Jainism. It is accepted as authoritative in both its major sub-traditions – Digambara and Śvētāmbara – as well as the minor sub-traditions. It is a philosophical text, and its importance in Jainism is comparable with that of the Brahma Sutras and Yoga Sutras of Patanjali in Hinduism. In an aphoristic sutra style of ancient Indian texts, it presents the complete Jainism philosophy in 350 sutras over 10 chapters. The text has attracted numerous commentaries, translations and interpretations since the 5th-century.

INDEX

1. Chapter-1 - Right Faith & Knowledge -------------- 1-35
2. Chapter 2 - Category of the Living ------------------ 36-89
3. Chapter 3 - The Lower world and the ---------------- 90-130
4. Chapter 4 - The Celestial Beings -------------------131-175
5. Chapter 5 - The non-living substances ---------------176-219
6. Chapter 6 - Influx of Karma------------------------220-248
7. Chapter 7 - Five Vows----------------------------249-288
8. Chapter 8 - Bondage of Karma---------------------289-319
9. Chapter 9 - Stoppage and Shedding of Karma-----------320-370
10. Chapter 10 - Liberation----------------------------371-381

Chapter-1 - Right Faith & Knowledge

प्रकरण १ - सम्यग्दर्शन एवं ज्ञान

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

मोक्षमार्ग प्रवर्तक दे, कर्म पर्वत भेद।
ज्ञाता विश्वतत्त्व के, वन्दित मैं गुण वेद॥

मोक्षमार्ग के प्रवर्तक, कर्मरुपी पर्वतों के भेदक तथा विश्व के समस्त तत्त्वों के ज्ञाता को उनके गुणों की प्राप्ति के हेतु मैं वन्दना करता हूँ।

I bow to omniscient god who is promulgator of the path of liberation, the destroyer of mountains of karmas and the knower of the whole reality of this universe so that I may realise these qualities.

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥

मोक्ष मार्ग के लिये, तीनों का हो साथ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान भी, सम्यक् चारित्र हाथ॥१.१॥

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक् चारित्र तीनों मिलकर मोक्ष का मार्ग है।

Right faith, right knowledge and right conduct together constitute the path of liberation.

तत्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्॥२॥

समझ स्वरूप पदार्थ का, सच्ची श्रद्धा मान।
सम्यग्दर्शन कहे उसे, जिनवर का यह ज्ञान॥१.२॥

पदार्थ के स्वरूप का सही श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है।

Right faith is belief in substances as they are.

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥

सम्यग्दर्शन हो प्रकट, अन्तर्मना स्वभाव।
जीव को उत्पन्न हुआ, गुरु शास्त्र के भाव॥१.३॥

वह सम्यग्दर्शन स्वभाव से या दूसरे के
उपदेशात्मक से उत्पन्न होता है।

The Samyak darshan is attained by intuition or by acquisition of knowledge or cognisance.

जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम्॥४॥

मुक्ति मार्ग के सात तत्त्व, शास्त्र यहीं परोक्ष।
जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा मोक्ष॥१.४॥

जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष- ये सात तत्त्व है।

The soul, the non-soul, influx, bondage, stoppage, gradual dissociation and liberation constitute the reality.

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ॥५॥

सम्यक् दर्शन स्थापना, करते चार प्रकार।
नाम, स्थापना, द्रव्य भी, भाव लोक व्यवहार॥१.५॥

नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव से उन सात तत्त्वों का लोक व्यवहार होता है।

Samyak darshan is installed by name, representation, substance and actual state.

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥

सात तत्त्व को जानना, प्रमाण-नय को जान।
द्रव्यार्थिक, पर्यायर्थिक, भिन्न भिन्न नय ज्ञान॥१.६॥

जीवादि तत्त्वों का ज्ञान प्रमाण और नय से होता है।

The knowledge of subjects like right faith etc and 7 substances is attained by means of pramana (comprehensive knowledge) and naya (different point of views).

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानत:॥७॥

सम्यग्दर्शन आदि त्रिरत्न, जीव आदि का ज्ञान।
निर्देश, साधन, स्वामित्व, अधिकरण, स्थिति, विधान॥१.७॥

सम्यग्दर्शन आदि त्रिरत्न व जीवादि सात तत्त्व का ज्ञान निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति व विधान से होता है।

The knowledge of subjects like right faith etc and 7 substances is attained by nirdesh (description), swamitva (ownership), sadhan (cause), adhikaran (substratum), sthiti (duration) and vidhan (division).

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च॥८॥

सत् , संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, मिलता है यह ज्ञान।
काल, अन्तर, भाव भी, अष्ठ अल्प-बहु जान॥१.८॥

सत् , संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व इन आठ अनुयोगों के द्वारा भी पदार्थ का ज्ञान होता है।

The seven substances are also known by existence, number, place, extent of space, time, interval of time, thought activity and reciprocal comparison.

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥

ज्ञान पाँच प्रकार है, मति, श्रुत, अवधि ज्ञान।
मनःपर्यय चौथा कहे, पंचम केवल ज्ञान॥१.९॥

ज्ञान पाँच प्रकार के है। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान।

Knowledge is of five kinds. Sensory, scriptural, clairvoyance, telepathy and omniscience.

तत्प्रमाणे ॥१०॥

मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय, केवल पाँच प्रकार।
बाँटे ज्ञान प्रमाण मे, दो है भेद प्रकार॥१.१०॥

उपरोक्त पाँच प्रकार के ज्ञान ही दो प्रकार के प्रमाण है।

These five kinds of knowledge is two types of valid knowledge.

आद्ये परोक्षम्॥११॥

मति श्रुत दोनों को समझ, आदि के दो ज्ञान।
है परोक्ष प्रमाण कहा, 'पर' पर निर्भर जान॥१.११॥

प्रारम्भ के दो (मति व श्रुत) परोक्ष प्रमाण है।

The first two kind of knowledge (sensory and scriptural) are indirect knowledge.

प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥

अवधि, मन:पर्यय, केवल है, तीन शेष है ज्ञान।
है प्रत्यक्ष प्रमाण कहा, स्व आत्मा के जान॥१.१२॥

शेष तीन (अवधि, मन:पर्यय और केवलज्ञान) प्रत्यक्ष प्रमाण है।

The remaining three (clairvoyance, telepathy and omniscience) are direct knowledge.

मतिः स्मृतिः संज्ञा
चिन्ताऽभिनिबोधइत्यनर्थान्तरम्॥१३॥

मति स्मृति संज्ञा चिन्ता, रहे या अभिनिबोध।
अर्थ में है अन्तर नहीं, नामान्तर संबोध॥१.१३॥

मति स्मृति संज्ञा चिन्ता अभिनिबोध इत्यादि अर्थान्तर नहीं है बल्कि नामान्तर है।

Sensory knowledge (Mati), remembrance (smriti), recognition (sanghya), induction (chinta), deduction (abhinibodh) etc are synonyms and not different in meaning.

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥

स्पर्श घ्राण रस चक्षु कर्ण, इन्द्रिय व मन मतिज्ञान।
निमित्त उस मतिज्ञान के, हे श्रावक यह जान॥१.१४॥

इन्द्रियाँ और मन उस मति ज्ञान के निमित्त है।

Senses (indriya) and mind (mann) are the via media for that sensory knowledge (matijnana).

अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥

मति ज्ञान के भेद है, उसे जान तू चार।
अवग्रह, ईहा, अवाय भी, करे धारणा धार॥१.१५॥

मति ज्ञान के चार भेद है। अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा।

There are four stages of sensory knowledge. Impression (avagraha), inquisitiveness (iha), comprehension (avay) and retention (dharana).

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम्॥१६॥

जल्दि, अनि:सृत, अनुक्त, ध्रुव, बहु ओ बहुत प्रकार।
इनका उल्टा भी करे, बारह भेद विचार॥१.१६॥

बहुत, बहुत प्रकार, जल्दि, अनि:सृत, अनुक्त, ध्रुव तथा उनसे उल्टे भेदो से युक्त अर्थात एक, एकविध, अक्षिप्र, नि:सृत, उक्त और अध्रुव इस प्रकार १२ प्रकार से अवग्रह-ईहादिरूप मतिज्ञान होते है।

Many, many kind, quick, hidden, unexpressed and lasting and their opposites, this way their are 12 subdivisions of sensory etc knowledge.

अर्थस्य ॥१७॥

अवग्रह, ईहा, अवाय है, धारणा मति ज्ञान।
वस्तु के ही संभव है, आगम का विज्ञान॥१.१७॥

अवग्रह आदि मति ज्ञान वस्तु के होते है।

Sensory knowledge is of substances only.

व्यञ्जनस्यावग्रह: ॥१८॥

शब्दा आदि अव्यक्त है, व्यन्जन उनको जान।
अवग्रह से ही संभव है, ईहा

आदि न मान॥१.१८॥

अप्रकट पदार्थो (शब्दादि) का मात्र अवग्रह ज्ञान होता है। ईहा, अवाय व धारणा नही होती।

For indistinct things (voice etc) only impression is possible. Inquisitiveness, comprehension and retention not possible.

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम्॥१९॥

शब्द आदि अव्यक्त है, व्यन्जन उनको जान।
आँख व मन पढ़ ना सके, शब्दा आदि का ज्ञान॥१.१९॥

व्यञ्जन का अवग्रह चक्षु व मन से नही होता

Eyes and mind can’t have impression of indistinct substances.

श्रुतं मतिपूर्वं द्वयनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

श्रुत ज्ञान मति पूर्व है, इसके है दो भेद।
बारह अंगप्रविष्ट है, अंगबाह्य कई भेद॥१.२०॥

मति ज्ञान के बाद श्रुत ज्ञान होता है। वह श्रुत ज्ञान दो प्रकार का है। अंगप्रविष्ट व अंगबाह्य। अंगप्रविष्ट बारह प्रकार का व अंगबाह्य अनेक प्रकार का होता है।

Scriptural knowledge is preceded by sensory knowledge. It is of 2 types (Angapravist & Angabahya), twelve types and many types respectively.

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥

भवप्रत्यय का ज्ञान है, जन्म स्थल आधार।
देव नारकिय जन्म से, अवधि ज्ञान विचार॥१.२१॥

भवप्रत्यय नामक अवधि ज्ञान देव और नारकियों को होता है।

Clairvoyance based on birth is possessed by the celestial the infernal beings.

क्षयोपशमनिमित्त: षड्विकल्प: शेषाणाम् ॥२२॥

मनुष्य और त्रियंच का, क्षयोपशम अवधिज्ञान।
वर्धमान का अनुगमन, अवस्थित उल्टा मान॥१.२२॥

क्षयोपशमनैमित्तक अवधिज्ञान छह भेदवाला है और वह शेष अर्थात् मनुष्यो व तिर्यंचो के होता है।

Clairvoyance due to kshyopsama is of six kinds. (Anugami, Ananugami, vardhman, hiyamaan, avastith & anavastith)It is acquired by the rest namely human beings and animal.

ऋजुविपुलमति मन:पर्यय: ॥२३॥

पर के मन को जान ले, मन:पर्यय दो भेद।
ऋजुमति और विपुलमति, सरल कुटिल का वेद॥॥१.२३॥

मन:पर्ययज्ञान दो प्रकार का है। ऋजुमति और विपुलमति।

Telepathy knowledge is of two types. Rjumati (straight) and vipulmati (crooked).

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२४॥

ऋजुमति और विपुलमति, है विशेष दो बात।
विपुलमति है विशुद्धतर, और है अप्रतिपात॥१.२४॥

परिणामो की विशुद्धि और अप्रतिपात अर्थात् केवलज्ञान होने से पूर्व न छूटना इन दो बातो से ऋजुमति व विपुलमति ज्ञान मे अन्तर होता है।

The difference between straight telepathy and crooked telepathy knowledge is due to level of purity and infallibility from gunasthana.

विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्ययोः॥२५॥

विशुद्धि क्षेत्र स्वामि विषय, अवधि मनः पर्यय विशेष।
मनःपर्यय तो विशिष्ट है, सूक्ष्म रहे ना शेष॥१.२५॥

अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान मे विशुद्धता, क्षेत्र, स्वामी और विषय की अपेक्षा से विशेषता होती है।

Clairvoyance knowledge and Telepathy knowledge differ with regard to purity, space, possessor and subject matter.

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥

जीव पुद्गल धर्म अधर्म, काल और आकाश।
जान सका पर्याय को, मति श्रुत का आभास॥१.२६॥

मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का विषय संबंध कुछ
पर्यायो से युक्त जीव पुद्गलादि सर्व द्रव्यो मे है।

The sensory and scriptural knowledge extends to few modes of all the six substances.

रूपिष्ववधे: ॥२७॥

रुप स्पर्श रस गंध है, गुण पुद्गल के जान।
सिर्फ़ इन्हें ही जानते, जो हो अवधिज्ञान॥१.२७॥

अवधिज्ञान सिर्फ रूपि पदार्थो को जानता है।

Clairvoyance knowledge can know substances with form only.

तदनन्तभागे मन:पर्ययस्य ॥२८॥

रुपि विषय अवधि समझ, सूक्ष्म की हो चाह।
अंग जानना अनन्तवे, मन:पर्यय की राह॥१.२८॥

मन:पर्यय ज्ञान, अवधि ज्ञान द्वारा जाने रूपि द्रव्य के अनन्तवे भाग को भी जान सकता है।

The scope of telepathy is the infinitesimal part of the matter ascertained by clairvoyance.

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य॥२९॥

सर्वद्रव्य पर्याय सब, लेना हो जो ज्ञान।
त्रिलोक व त्रिकाल को, जाने केवल ज्ञान॥१.२९॥

केवलज्ञान एक ही साथ सभी पदार्थों को और उनकी सभी पर्यायों को जानता है।

Omniscience mean knowing all substances and all their modes simultaneously.

एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः॥३०॥

मति श्रुत अवधि मन:पर्यय, केवल और विचार।
ज्ञानी केवल जानता, एक साथ बस चार॥१.३०॥

एक जीव मे एक साथ एक से लेकर चार ज्ञान पाने की योग्यता हो सकती है।

One soul can acquire one to four knowledge simultaneously.

मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च॥३१॥

इक है और विशेषता, मति श्रुत अवधि ज्ञान।
मिथ्या की संभावना, उल्टा पड़ता जान॥१.३१॥

मति, श्रुत व अवधि ज्ञान त्रुटिपूर्ण भी हो सकते है।

Sensory, scriptural and clairvoyance knowledge can be erroneous also.

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्॥३२॥

सत् असत् का भान नहीं, वो है मिथ्या ज्ञान।
सत् असत् को सही कहे, तो भी मिथ्या जान॥१.३२॥

विद्यमान और अविद्यमान (सत् व असत्) पदार्थो का भेदरुप ज्ञान न होने से अपनी इच्छा से चाहे जैसा ग्रहण करने के कारण पागल के ज्ञान की भाँति मिथ्या दृष्टि का ज्ञान मिथ्याज्ञान होता है।

Due to lack of differentiation between real and not real knowledge of substances one receive the wrong knowledge like insane.

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नया: ॥१.३३॥

नैगम, व्यवहार, संग्रह, नय ऋजुसूत्र विचार।
शब्द व भूत समभिरूढ, मूल सात प्रकार॥१.३३॥

नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरुढ व एवंभूत ये सात दृष्टिकोण (नय) है।

The basic (original) nayas (stand-points) are seven:
1. Intentional (Naigam);
2. General/common (Samgraha);
3. Systematic(Vyavhar);
4. Straight (Rju-sutra);
5. Descriptive (Shabda);
6. Conventional (Samabhirudha); and
7. Specific (Evambhuta).

Chapter 2 - Category of the Living - जीव तत्त्व

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य
स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च॥२.१॥

औपशमिक व क्षायिक है, मिश्र भी है निज भाव।
औदयिक व पारिणामिक, आत्मा का स्वभाव॥२.१.३४॥

जीव के पाँच भाव निज भाव है जो और द्रव्य में नहीं होते। औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक और पारिणामिक।

Soul have 5 distinctive characteristics. Subsidence, destruction, destruction cum subsidence, fruition and inherent nature.

द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम्॥२.२॥

जीव भाव के भेद है, क्रम से उनको जान।
दो नौ अठारह समझो, इक्कीस तीन विधान॥२.२.३५॥

उपरोक्त पाँच भाव क्रमशः दो, नौ, अट्ठारह, इक्कीस व तीन भेद वाले है।

These though activities (bhava) are of two, nine, eighteen, twenty one and three types respectively.

सम्यक्त्वचारित्रे ॥२.३॥

औपशमिक सम्यग्दर्शन, कहे चारित्रिक भेद।
सात और अट्ठाईस है, क्रम से रहे प्रभेद ॥२.३.३६॥

औपशमिक चारित्र है, भेद दूसरा भाव
औपशमिक भाव के दो भेद है। औपशमिक सम्यक्त्व व औपशमिक चारित्र।

Subsidence disposition is of two types. Subsidence belief and subsidence conduct.

ज्ञानदर्शनदानलाभभेगोपभोगवीर्याणि च॥२.४॥

दान ज्ञान दर्शन यही, लाभ भोग उपभोग।
बल चारित्र सम्यक्त्व भी, नव है क्षायिक योग॥२.४.३७॥

क्षायिक भाव के नौ भेद है। क्षायिकज्ञान, क्षायिकदर्शन, क्षायिकदान, क्षायिकलाभ, क्षायिकभोग, क्षायिकउपभोग, क्षायिकवीर्य, क्षायिकसम्यक्त्व व क्षायिकचारित्र।

Destructional disposition is of 9 kind. Perfect knowledge, Perfect perception, Pure state of charity, Full beneficial state, Perfect state of consumption, Perfect state of enjoyment, Perfect energy, Perfect belief and Perfect conduct.

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥२.५॥

चार ज्ञान अज्ञान दर्शन, लब्धि सम्यक्त्व स्वभाव।
चारित्र संयमासंयम, क्षायोपशमिक भाव॥२.५.३८॥

क्षायोपशमिकभाव के १८ भेद है।

१। मतिज्ञान

२। श्रुतज्ञान

३। अवधिज्ञान

४। मन:पर्ययज्ञान

५। कुमति अज्ञान

६। कुश्रुत अज्ञान

७। कुअवधि ज्ञान

८। चक्षु दर्शन

९। अचक्षु दर्शन

१०। अवधि दर्शन

११-१५। क्षायोपशमिक दान लाभ भोग उपभोग वीर्य

१६। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

१७। क्षायोपशमिक चारित्र

१८। संयमासंयम

The destructional cum subsidential disposition is of 18 kinds:

1. **Four kinds of knowledge**
2. **3 kinds of wrong knowledge**
3. **3 kinds of perception**
4. **5 kinds of attainment**
5. **Right belief**
6. **Conduct**
7. **Restraint cum non-restraint**

गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदा: ॥२.६॥

गति कषाय लिंग कुदर्शन, अज्ञान असंयम भाव।
लेश्या व असिद्धत्व भी, इक्कीस औदयिक भाव॥२.६.३९॥

औदयिक भाव के २१ भेद इस प्रकार है। गति (नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव), कषाय (क्रोध, मान, माया व लोभ), लिंग (स्त्रीवेद, पुरुषवेद व नपुंसकवेद), मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व व लेश्यायें (कृष्ण, नील, कपोत, पीत, पद्म और शुक्ल)।

4 Existence, 4 passions, 3 sex, wrong belief, wrong knowledge, non-restraint, imperfect disposition and 6 coloration of soul are total 21 types of rise of karmas.

जीवभव्याभव्यत्वानि च॥७॥

जीवत्व और भव्यत्व, अभव्यत्व आत्म भाव।
अन्य द्रव्य में है नहीं, पारिणामिक स्वभाव॥२.७.४०॥

पारिणामिक भाव के तीन भेद है। जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व।

Consciousness, capacity of salvation and incapacity of salvation are inherent nature of soul.

उपयोगो लक्षणम् ॥८॥

आत्मा का चैतन्यपना, कहलाता उपयोग।
लक्षण है यह जीव का, मन वचन काय योग॥२.८.४१॥

जीव का लक्षण उपयोग है।

Consciousness is distinctive characteristic of soul.

स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः॥९॥

दो प्रकार उपयोग का, ज्ञान, दर्शन उपयोग।
आठ तरह का ज्ञान है, चार दर्शनोपयोग॥२.९.४२॥

उपयोग दो प्रकार का है। ज्ञानोपयोग के ८ भेद है व दर्शनोपयोग के ४ भेद है।

Consciousness is of 2 kinds. Knowledge and Faith. Knowledge of 8 types and darshan is of 4 types.

संसारिणो मुक्ताश्च॥१०॥

दो प्रकार के जीव है, इक भटके संसार।
मुक्त हुआ जो कर्म से, सिद्ध शिला आधार॥२.१०.४३॥

जीव दो प्रकार के है। संसारी और मुक्त।

Souls are of 2 types. With karm bondage (sansari) and without karm bondage (Mukta).

समनस्काऽमनस्का: ॥११॥

रहता जो संसार में, उसके दो परकार।
संज्ञी मन के साथ है, असंज्ञी शेष विचार॥२.११.४४॥

संसारी जीव दो प्रकार के है। मनसहित व मनरहित।

Transmigrating souls are of two types. With and without mind.

संसारिणस्त्रसस्थावराः॥१२॥

संसारी के भेद दो, त्रस व स्थावर जान।
स्थितपना स्थावरा, बाक़ी को त्रस मान॥२.१२.४५॥

संसारी जीव के दो और भेद है। त्रस व स्थावर।

Transmigrating souls have two more types. Sort of immobile and have mobility.

पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः॥१३॥

पृथ्वी जल और अग्नि भी, वायु वनस्पति जीव।
काया स्थावर की यही, पाँच तरह के जीव॥२.१३.४६॥

स्थावर जीव पाँच प्रकार के है। पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय व वनस्पतिकाय। ये एकइन्द्रिय होते है।

Immobile beings (sthavar) souls adapt body of earth, water, fire, air and plants.

द्वीन्द्रियादयस्त्रसा: ॥१४॥

ये त्रस जीव विशेषता, इंद्रि दो तीन चार।
पाँच इन्द्रिय भी त्रस कहे, जैन आगम विचार॥२.१४.४७॥

दो से पाँच इन्द्रिय जीव त्रस जीव कहलाते है।

The mobile beings are from two sense onwards.

पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥

एक पाँच तक इन्द्रियाँ, होती है हर जीव।
त्रस रहे स्थावर रहे, इन्द्रिय बिना ना जीव॥२.१५.४८॥

इन्द्रियाँ पाँच है।

The senses are five.

द्विविधानि॥१६॥

इन्द्रियों के भी समझ लो, होते दोय प्रकार।
द्रव्य और है भाव इन्द्रि, जिन धर्म का विचार॥२.१६.४९॥

इन्द्रियाँ दो प्रकार की है। द्रव्येन्द्रि व भावेन्द्रि।

Senses are of 2 types. Physical and psychic.

निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥

निर्वृत्ति और उपकरण, द्रव्य इन्द्रिय प्रकार।
बाह्य और आभ्यन्तर, नाम कर्म का भार॥२.१७.५०॥

द्रव्येन्द्रि के दो भेद है। निर्वृत्ति व उपकरण।

The physical sense consist of internal and external organ.

लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्॥१८॥

भावेन्द्रि दो भेद है, लब्धि और उपयोग।
लाभ को लब्धि कहते, आत्म ज्ञान उपयोग॥२.१८.५१॥

भावेन्द्रि के दो भेद है। लब्धि व उपयोग।

Psychic sense consist of 2 types. Attainment and consciousness.

स्पर्शनरसनघ्राणचक्षु:श्रोत्राणि॥१९॥

इन्द्रियाँ पाँच प्रकार की, स्पर्शन रसना जान।
घ्राण, चक्षु व श्रोत्र भी, लेता इनसे ज्ञान॥२.१९.५२॥

इन्द्रियाँ पाँच प्रकार की है। स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु व श्रोत्र।

Physical sense are of 5 types. Touch, taste, smell, sight and hearing.

स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः॥२०॥

पंच इन्द्रियों को क्रम से, पाँच विषय को जान।
इस वर्ष रस और गंध है, वर्ण शब्द का ज्ञान॥२.२०.५३॥

पाँच इन्द्रियों के क्रमशः पाँच विषय है। स्पर्श, रस, गंध, वर्ण व शब्द।

Touch, taste, smell, colour and sound are the objects of the senses.

श्रुतमनिन्द्रियस्य॥२१॥

अनिन्द्रिय मन को कहा, होता है श्रुत ज्ञान।
श्रुत विषय नहीं कर्ण का, ले लो यह संज्ञान॥२.२१.५४॥

मन का प्रयोजन श्रुतज्ञान है।

Spiritual knowledge is the subject of mind.

वनस्पत्यन्तानामेकम् ‖२२‖

एक इन्द्रिय जीव सभी, पृथ्वीकाय, जलकाय।
अग्निकाय वायुकाय भी, और वनस्पतिकाय‖२.२२.५५‖

वनस्पति जिस के अन्त मे आती है जैसे पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय व वनस्पतिकाय इनके एक इन्द्रिय होती है।

Upto plants all living beings have one sense only.

कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादिनामेकैकवृद्धानि॥२३॥

कीड़ा पिपीलिका बढ़े, भँवरा मानव जात।
कृम इक इक इन्द्रि बढ़े, जिनवाणी की बात॥२.२३.५६॥

कृमि अर्थात् कीड़ा आदि के दो, पिपीलिका अर्थात् चींटि आदि के तीन, भंवरा आदि के चार व मनुष्य आदि के पांच, एक एक इन्द्रिय बढती जाती है।

The worm etc. 2 sense, the ant etc 3 sense, the bee etc 4 sense and human is example of 5 sense.

संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥

पाँच इन्द्रिय जीव जो, मन हो जिसके जान।
संज्ञी पंचेन्द्रिय कहे, हित व अहित का भान॥२.२४.५७॥

मनसहित जीवो का संज्ञी अथवा सैनी कहते है।

Five sense Living being with mind is called SANGHYEE PANCHENDRIYA.

विग्रहगतौ कर्मयोग: ॥२५॥

मरण जन्म के मध्य को, विग्रह गति का नाम।
चले कार्मणकाय संग, बाक़ी का क्या काम॥२.२५.५८॥

विग्रहगति अर्थात् नये शरीर के लिये गमन में कार्मणकाय योग होता है।

In transit from one body to another body soul travels with karma. This is called vigraha gati.

अनुश्रेणि गतिः ॥२६॥

जब इक गति से दूसरी, जीव चलेगा चाल।
पंक्ति में ही जीव चले, गज शतरंज की चाल॥२.२६.५९॥

विग्रहगति आकाश प्रदेशो की श्रेणि (पंक्ति) के अनुसार ही होती है।

Transition of soul take place in straight lines in universe.

अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥

सिद्धशिला जाना रहे, मुक्त जीव की राह।
सीधा ऊपर को गमन, मुड़ने की ना चाह॥२.२७.६०॥

मुक्तजीव की गति विग्रहरहित अर्थात् सीधी होती है।

Liberated soul travels straight upward till siddha shila.

विग्रहवती च संसारिण: प्राक् चतुर्भ्य: ॥२८॥

चार समय के पूर्व ही, नव शरीर को थाम।
विग्रहगति संसार में, अधिक नहीं है काम॥२.२८.६१॥

संसारी जीव की गति विग्रहवाली (मोड़) व विग्रहरहित होती है। विग्रहवाली गति चार समय के पहले अर्थात् तीन समय तक होती है।

Before 4th instant (samay), transmigrating soul takes next body.

एकसमयाऽविग्रहा ॥२९॥

मोड़ नहीं हो राह में, विग्रहरहित प्रवाह।
एक पल का काम रहे, विघ्नरहित है राह॥२.२९.६२॥

विग्रहरहित गति एक समयमात्र ही होती है।

Movement without bend takes only one instant.

एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ॥३०॥

समय एक दो तीन तक, आहारक ना जीव।
विग्रहगति जब गमन रहे, अनाहार वह जीव॥२.३०.६३॥

विग्रहगति मे (एक, दो या तीन समय तक) जीव अनाहारक रहता है।

During transmigration soul remain non-assimilative. M

सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ॥३१॥

जन्म तीन प्रकार का, सम्मूर्च्छन, उपपाद।
मात पिता संयोग गर्भ, जिनवाणी रख याद॥२.३१.६४॥

जन्म तीन प्रकार का होता है। सम्मूर्च्छन, गर्भ और उपपाद।

There are 3 ways of birth. Spontaneous, uterus and special bed.

सचित्तशीतसंवृता: सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनय:॥३२॥

सचित्त अचित्त शीत उष्ण, संवृत विवृत योनि।
सचिताचित शीतोष्ण भी, संवृतविवृत नव
योनि॥२.३२.६५॥

सचित्त, शीत व संवृत अर्थात ढका हुआ व उसका उल्टा (अचित्त, उष्ण व खुला हुआ) तथा मिश्र (सचित्तचित, शीतोष्ण और संवृतविवृत) ये नव जन्मयोनियाँ है।

Living matter, cold, covered, their opposites and their combinations are the nuclei severally.

जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥३३॥

त्रि प्रकार के गर्भ जन्म, मांस रक्त का जाल।
अण्डा श्वेत ये गोल सा, जन्मत ही हो चाल॥२.३३.६६॥

गर्भ जन्म तीन प्रकार का है। जरायुज, अण्डज और पोतज।

Birth through uterus is of 3 kinds. Umbilical, from egg and unumbilical.

देवनारकाणामुपपादः ॥३४॥

जन्म देव और नारकी, शय्या या उपपाद।
अपना अपना स्थान है, जिनवाणी रख याद॥२.३४.६७॥

देव और नारकी जीवों के उपपाद (शय्या या विशेष स्थान) जन्म होता है।

The birth of deva and Narakiya is by instantaneous in special beds.

शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥

बाक़ी सबका जन्म हो, सम्मूर्च्छन आधार।
चार इन्द्रिय तक सभी, सम्मूर्च्छन संसार॥२.३५.६८॥

गर्भ व उपपाद के अलावा शेष जीवों का जन्म सम्मूर्च्छन जन्म होता है।

The birth of rest is by spontaneous generation.

औदारिकवैक्रियिकाहारिकतैजसकार्मणानि शराराणि ॥३६॥

औदारिक, वैक्रियिक ये, होते देह प्रकार।
आहारिक व तैजस भी, कार्मण करो विचार॥२.३६.६९॥

शरीर पाँच प्रकार का है। औदारिक, वैक्रियिक, आहारिक, तैजस, कार्मण।

Bodies are of 5 types. Gross body, transformable, assimilative, luminous and karmic.

परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥

औदारिक वैक्रियिक ये, आहारिक को जान।
तेजस कार्मण साथ में, सूक्ष्म सूक्ष्म पहचान॥२.३७.७०॥

पहले कहे गये शरीरो की अपेक्षा क्रम से सूक्ष्म सूक्ष्म होते है।

The bodies are more and more subtle respectively.

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात्॥३८॥

औदारिक से वैक्रियिक, गुण प्रदेश असंख्यात।
आहारक वैक्रियिक से, गुण प्रदेश असंख्यात॥२.३८.७१॥

प्रदेशो कि अपेक्षा से तैजस शरीर के पहले तक क्रमसे बढते हुए असंख्यातगुणे है।

Prior to the luminous body, space atoms are innumerable more than previous body.

अनन्तगुणे परे॥३९॥

अनन्तगुणे प्रदेश से, तैजस तन के जान।
तैजस से कार्मण गणे, अनन्तगुणे पहचान॥२.३९.७२॥

आहारक से तैजस व तैजस से कार्मण शरीर अनन्तगुणे प्रदेश वाले है।

The last two (tejas and karman) have infinite space points.

अप्रतीघाते॥४०॥

तैजस कार्मण को कभी, कोई सके न रोक।
अप्रतीघात गुण यही, करता भ्रमण त्रिलोक॥२.४०.७३॥

तैजस व कार्मण शरीर बाधारहित है।

Tejas and karman body is unpreventable. They can pass through any hurdle.

अनादिसम्बन्धे च॥४१॥

तैजस और कार्मण भी, रहते अनादि साथ।
भ्रमण करे सह जीव के, छुटे मोक्ष में हाथ॥२.४१.७४॥

तैजस व कार्मण शरीर आत्मा के साथ अनादिकाल से सम्बन्ध वाले है।

Tejas and karman body have beginning less association with soul.

सर्वस्य॥४२॥

तैजस कार्मण संग चले, जीव रहे संसार।
सब जीवो के संग रहे, भवसागर ना पार॥२.४२.७५॥

तैजस व कार्मण शरीर सभी संसारी जीवों के होते है।

These two bodies are associated with all samsari souls.

तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः॥४३॥

तैजस कार्मण संग में, तन संभव है चार।
वैक्रियिक आहारक में, संभव एक विचार॥२.४३.७६॥

तैजस व कार्मण शरीर लेकर एक जीव के चार शरीर तक हो सकते है। वैक्रियक व आहारक मे से एक ही शरीर हो सकता है।

With tejas and karman there can be maximum 4 bodies together.

निरुपभोगमन्त्यम्॥४४॥

अंतिम शरीर कार्मण है, करता ना उपभोग।
तेजस तो निमित्त नहीं, प्रश्न नहीं उपभोग॥२.४४.७७॥

अन्त का कार्मण शरीर उपभोगरहित होता है।

The last body karman don’t consume any thing.

गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम्॥४५॥

औदारिक है तन प्रथम, उत्पत्ति पथ जान।
सम्मूर्च्छन और गर्भ ही, इनकी है पहचान॥२.४५.७८॥

गर्भ और सम्मूर्च्छन से जन्म होने वाला शरीर पहला अर्थात् औदारिक है।

Audarik body is gained through uterus or spontaneous only.

औपपादिकं वैक्रियकम्॥४६॥

जन्म देव और नारकी, शय्या या उपपाद।
वैक्रियिक धारण करे, बात रखो यह याद॥२.३४.६७॥

उपपाद जन्म वाले देव व नारकिय शरीर वैक्रियक होते है।

The transformable body originated by birth in special beds in swarga and naraka.

लब्धिप्रत्ययं च॥४७॥

वैक्रियिक शरीर मिले, ऋद्धि निमित्त भी जान।
उपपाद निश्चित रहते, लब्धि भी पहचान॥२.४७.८०॥

वैक्रियक शरीर ऋद्धिनिमित्तक भी होता है।

Transformable body can also be gained by attainment (Riddhi).

तैजसमपि॥४८॥

तैजस भी संभव यहाँ, ऋद्धि निमित्त सुजान।
वैसे तो हर जीव के, लब्धि को पहचान॥२.४७.८१॥

तैजस शरीर भी लब्धिप्रत्यय होता है।

Luminous body can also be attained by Riddhi.

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव॥४९॥

शुभ, विशुद्ध बाधारहित, आहारक को जान।
छठवें गुण मुनि स्थान है, प्रमत्तसंयत पहचान॥२.४९.८२॥

आहारक शरीर शुभ, विशुद्ध, बाधारहित तथा प्रमत्तसंयत मुनि (छठवेगुण स्थान) के ही होता है।

The projectable (Aharak) body is auspicious, pure, unstoppable and originates only to the saint of sixth stage (pramatta sanyat).

नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि॥५०॥

ना स्त्री ना पुरुष ही, नपुंसक उसको जान।
नारकी व सम्मूर्च्छन, नपुंसकता पहचान॥२.५०.८३॥

नारकी और सम्मूर्च्छन वाले नपुंसक होते है।

The infernal beings (Naraki) and spontaneously generated (sammurchchan) are of neutral sex.

न देवा: ॥५१॥

स्त्री पुरुष सुख भोगते, देवों की पहचान।
जनम नपुंसक ले नहीं, देवों में यह मान॥२.५१.८४॥

देव नपुंसक नहीं होते।

The celestial beings (Deva) are not neutral sex. They are males or females.

शेषास्त्रिवेदाः॥५२॥

स्त्री पुरुष नपुंसक भी, तीन शेष के वेद।
नारक देव सम्मूर्च्छन, बाक़ी के त्री भेद॥२.५२.८५॥

शेष (गर्भज मनुष्य और तिर्यंच) तीनो वेद वाले होते हैं।

The rest are of three sexes.

औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुष: ॥५३॥

देव नारकी सेज जन्म, असंभव मरण अकाल।
चरमोत्तम है देह जहाँ, उम्र असंख्यात साल॥२.५३.८६॥

उपपाद जन्म वाले देव और नारकी, उसी भव में मोक्ष जाने वाले चरम उत्तम देहधारी तथा असंख्यात वर्ष वाले भोगभूमि जीव की आयु अपवर्तन रहित होती है।

Followings can't die before their time for natural death has come. Dev and naraki who born in special beds, who has superior bodies and those of innumerable years of age.

॥ इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्याय:॥

Chapter 3 - The Lower world and the middle world - अधो व मध्यलोक

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहातमः प्रभाभूमयो
घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः॥१॥

रत्न शर्करा वालुका, पंक धूम तम भार।
महातम प्रभा भूमिया, घन नभ का आधार॥३.१.८७॥

अधोलोक की भूमियाँ
रत्नप्रभा
शर्कराप्रभा
बालुकाप्रभा
पंकप्रभा
धूमप्रभा
तमप्रभा और
महातमप्रभा
घनोंदधि, घन और तनु वातवलय तथा आकाश के
आधार पर प्रतिष्ठित है।

The lower world consists of seven earths:
Ratna
Sarkaar
Baluka
Panka

Dhuma
Tamah
Mahatamaha
Surrounded by 3 kinds of air
ghanodadhi vaatvalaya
Ghan vaatvalay
Tanu vaatvalay
And base is space.

तासुत्रिंशत्पञ्चविंशतिपंचदशदशत्रिपञ्चोनैकनरकशतसहस्त्रा
णि पञ्च चैव यथाक्रमम्॥२॥

लाख तीस पच्चीस है, पन्द्रह दस व तीन।
एक लाख कम पाँच है, बिल पाँच संगीन॥३.२.८८॥

उसमे
रत्नप्रभा ३० लाख
शर्कराप्रभा २५ लाख
बालुकाप्रभा १५ लाख
पंकप्रभा १० लाख
धूमप्रभा ३ लाख,
तमप्रभा पाँच कम एक लाख और
महातमप्रभा केवल ५ बिल है।
इस प्रकार ८४ लाख बिल है।

These naraka earth have following number of abodes:
Ratna 30 Lacs
Sarkaar 25 Lacs
Baluka 15 Lacs
Panka 10 Lacs
Dhuma 3 Lacs
Tamah 99995
Mahatamaha 5

नारकी नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रिया॥३॥

लेश्या भाव अशुभतर, अशुभ शरीर विचार।
वेदना क्रिया अशुभतर, नरक बड़ा है भार॥३.३.८९॥

नारकी जीव सदैव ही अत्यन्त अशुभतर लेश्या, अशुभतर परिणाम, अशुभतर शरीर, अशुभतर वेदना और अशुभतर विक्रिया को धारण करते है।

Infernal beings are most inauspiciously in succession with respect to:
colouration
Thoughts
Body
Suffering
Deeds

परस्परोदीरितदु:खा:॥४॥

परस्पर दु:ख उत्पन्न करे, लड़ते है दिनरात।
जीवन है अत्यन्त कठिन, बचो नरक में घात॥३.४.९०॥

नारकी जीव परस्पर एक दूसरे को दु:ख उत्पन्न करते है। वे निरन्तर परस्पर में लड़ते रहते है।

They continuously cause suffering to each other.

संक्लिष्टासुरोदीरितदु: खाश्च प्राक् चतुर्थ्या:॥५॥

असुरकुमार कष्ट करे, तीजे तक वे आय।
दु:ख की सीमा ही नहीं, नरक कभी ना जाय॥३.५.९१॥

संक्लेश परिणामवाले असुरकुमार देव तीसरी नरक पृथ्वी तक दु:ख उत्पन्न करते है।

Upto 3 naraka suffering is also caused by asurkumaras.

तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपम सत्त्वानां परा स्थितिः॥६॥

एक तीन सात व दस है, सत्रह बाईस जान।
तैंतीस सागर आयु है, क्रमशः अधिकतम मान॥३.६.९२॥

नारकी जीवों की उत्कृष्ट आयुस्थितिः

- रत्नप्रभा १ सागर
- शर्कराप्रभा ३ सागर
- वालुकाप्रभा ७ सागर
- पंकप्रभा १० सागर
- धूमप्रभा १७ सागर
- तमप्रभा २२ सागर
- महातमप्रभा ३३ सागर

Maximum duration of life of infernal beings is as follow:
Ratnaprabha 1 sagar
Sarkaar 3 sagar
Baluka 7 sagar
Panka 10 sagar
Dhuma 17 sagar
Tamah 22 sagar
Mahatamaha 33 sagar

जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः॥७॥

जम्बूद्वीप लवण समुद्र, है स्थित मध्यलोक।
शुभनाम है द्वीप असंख्य, समुद्र बसे इस लोक॥३.७.९३॥

शुभ नाम वाले जम्बूद्वीप आदि द्वीप और लवणसमुद्र आदि समुद्र मध्यलोक में है।

Middle world have jambudvipa continent etc and lavanoda ocean etc with auspicious names.

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः॥८॥

द्वीप समुद्र है पूर्व से, दूना है विस्तार।
गोल घेरा बना हुआ, चूड़ी सा आकार॥३.८.९४॥

ये दूने दूने विस्तार वाली द्वीप और समुद्र अपने से पहले वाले को घेरे हुए चूड़ी के आकार के समान वलयाकृत है।

These are the double the diameter of the preceding ones and circular in shape, each encircling the immediately preceding one.

तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्त्रविषकम्भो जम्बूद्वीप:॥९॥

जम्बू द्वीप समुद्र मध्य, लख योजन विस्तार।
मेरु मध्य में नाभि सा, अतिसुन्दर आकार॥३.९.९५॥

उन द्वीप समुद्रों के मध्य में मेरु है नाभि जिसकी, ऐसा एक लाख योजन विस्तारवाला जम्बू द्वीप है।

In the middle of these oceans and continents is Jambudwipa which is round and which is one lac yojan in diameter. Mound Meru is at the center of this continent like the naval in the body.

भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥

भरत, हैमवत और हरि, विदेह, रम्यक भाग।
ऐरावत व हैरण्यवत, सात क्षेत्र विभाग॥३.१०.९६॥

जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र है।
भरत
हैमवत
हरि
विदेह
रम्यक
हैरण्यवत
ऐरावत

Jambudwip has seven regions:

Bharata
Haimavata
Hari
Videha
Ramyaka
Hairanyavata
Airavata

तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनील
रुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वती:॥११॥

पूर्व पश्चिम तक लंबे, छह पर्वत पहचान।
हिमवन संग महाहिमवन, फैले पर्वत महान॥
है निषध, और नील भी, रुक्मि पर्वत जान।
शिखरी भी पर्वत बड़ा, महानता पहचान॥३.११.९७॥

इन क्षेत्रों को विभाजित करने वाले और पूर्व पश्चिम तक लंबे हिमवन, महाहिमवन, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी ये छहवर्षधर अर्थात क्षेत्रों को धारण करने वाले पर्वत है।

The mountain chains Himavan, Mahahimavan, Nisadha, Nila, Rukmi and Sikhari running east to west divide these regions.

हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः॥१२॥

सोने, चाँदी से बने, सोना तपा व नील।
चाँदी सोना मय सहित, छह पर्वत के डील॥३.१२.९८॥

ये छहो पर्वत क्रम से सोना, चांदी, तपाया हुआ सोना, वाड्डूर्यमणि, चाँदी और सोना मय है।

They are golden, silver, purified gold, blue, silvery and golden in colour respectively.

मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्तारा:॥१३॥।

विचित्र मणि से है जड़े, पार्श्व भाग श्रंगार।
ऊपर मध्य व मूल में, इक जैसा विस्तार॥३.१३.९९॥

इनके पार्श्व भाग अनेक प्रकार की विचित्र मणियों से जड़े हुए है और ऊपर, मध्य एवं मूल में एक से विस्तार वाले हैं।

The sides of these mountains are studded with various jewels and the mountains are of equal width at he foot, in the middle and at the top.

पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका
ह्रदास्तेषामुपरि॥१४॥

पद्म, महापद्म, तिगिंच्छ है, केशरी सरोवर नाम।
झील महापुण्डरीक भी, पुण्डरीक भी धाम॥३.१४.१००॥

हिमवन आदि पर्वतों के ऊपर क्रमशः पद्म, महापद्म, तिगिंच्छ, केशरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक नाम के सरोवर है।

On top of these mountains padma, mahapadma, tigincha, kesari, mahapundarika and pundarika are the lakes.

प्रथमो योजनसहस्त्रायामस्तदर्द्धविषकम्भो ह्रदः॥१५॥

पहला पद्म सरोवर है, योजन एक हज़ार।
चौड़ाई है पाँच सौ, पर्वत है आधार॥३.१५.१०१॥

पहला पद्म सरोवर एक हज़ार योजन लम्बा और लम्बाई से आधा अर्थात् पाँच सो योजन चौड़ा है।

The first Padma lake is 1000 yojans in length and half in breadth.

दशयोजनावगाहः॥१६॥

पद्म सरोवर प्रथम है, लम्बा चौड़ा विशाल।
गहरा दस योजन कहा, हिमवन का है ताल॥३.१६.१०२॥

पहला सरोवर दस योजन गहराई वाला है।

The depth is ten yojans.

तन्मध्ये योजनं पष्करम्॥१७॥

पद्म सरोवर मध्य में, सुन्दर कमल विराज।
इक योजन आकार है, हिमवन का है ताज॥३.१७.१०३॥

इसके बीच में एक योजन का कमल है।

In the middle of first lake there is a lotus of the size of one yojan.

तद्द्विगुणद्विगुणा विस्तारा: ह्रदा: पुष्कराणि च॥१८॥

शेष सरोवर कमल भी, बढ़ता है आकार।
दूने दूने प्रथम से, क्रम से है विस्तार॥३.१८.१०४॥

आगे के सरोवर और कमल दूने दूने आकार के है।

Next lakes as well as the lotuses are double the magnitude respectively.

तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपम स्थितयः ससामीनिकपरिषत्काः ॥१९॥

श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी कमल प्रवास।
सामानिक पारिषद सहित, पल्योपम तक वास॥३.१९.१०५॥

इन कमलों में क्रमशः श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये छह देवियाँ सामानिक और पारिषद देवों के साथ निवास करती है। इनकी आयु एक पल्योपम है।

In these lotuses live the Devi called Sri, Hri, Dhriti, Kirti, Buddhi and Laxmi respectively and whose life is one palya and they live with samannikas and Parisatkas.

गंगासिंधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदा:सरितस्तन्मध्यगा: ॥२०॥

भरत आदि सातों जगह, चौदह नदी प्रवाह।
गंगा-सिन्धु पूरब पश्चिम, भरत क्षेत्र निर्वाह॥
रोहित-रोहितास्य है, हैमवत की राह।
हरित-हरिकान्ता बहे, हरि क्षेत्र प्रवाह॥
सीता-सीतोदा बहे, विदेह क्षेत्र की जान।
नारी-नरकान्ता बहे, रम्यक की पहचान॥
स्वर्ण-रूप्यकूला बहे, हैरण्यवत के बीच।
रक्ता- रक्तोदा बहे, ऐरावत को सींच॥३.२०.१०६॥

गंगा-सिन्धु, रोहित-रोहितास्या, हरित-हरिकान्ता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, स्वर्णकूला-रूप्यकूला और रक्ता-रक्तोदा ये चौदह नदियाँ क्षेत्रों के बीच में बहती है।

In these 7 areas 14 rivers flows across these regions.
Ganga- Sindhu
Rohit- Rohitasya
Harit- Harikanta
Sita- Sitoda
Nari- Narakanta
Suvarnakula- Rupyakula
Rakta-Raktoda

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः॥२१॥

मध्य लोक हर क्षेत्र में, दो दो नदी महान।
प्रथम नदी है बह रही, पूर्व दिशा में जान॥३.२१.१०७॥

दो के समूह में पहली नदी पूर्व की ओर बहती है।

The first of each pair flows eastward.

शेषास्त्वपरगाः॥२२॥

मध्य लोक हर क्षेत्र में, दो दो नदी महान।
दूजी बहती है नदी, पश्चिम के पथ जान॥३.२२.१०८॥

शेष पश्चिम की ओर जाती है।

The rest are the western rivers.

चतुर्दशनदीसहस्त्रपरिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्य:॥२३॥

मध्य लोक हर क्षेत्र में, नदियाँ बहुत विचार।
दो प्रधान नदियाँ रहे, चौदह संग हज़ार॥३.२३.१०९॥

गंगा और सिन्धु आदि नदियाँ चौदह चौदह हज़ार सहायक नदियों से घिरी हुई है।

The Ganga and the Sindhu etc have 14000 tributaries.

भरतः षड्विंशतिपंचयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागायोजनस्य॥२४॥

भरत क्षेत्र विस्तार है, पाँच शतक छब्बीस।
योजन इसमें जोड़िये, छह बट्टा उन्नीस।३.२४.११०॥

भरत क्षेत्र का विस्तार पाँच सौ छब्बीस योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से छह भाग अधिक है।

Bharata is 526 and 6/19 yojans in width.

तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः॥२५॥

भरत क्षेत्र से विदेह तक, क्षेत्र पर्वताकार।
हर क्षेत्र बढ़ता चले, दोहरा हो विस्तार॥३.२५.१११॥

विदेह क्षेत्रक तक के पर्वत और क्षेत्र भरत क्षेत्र से दुगने दुगने विस्तार वाले है।

The mountains and the regions are double in width upto Videha.

उत्तरा दक्षिणतुल्याः॥२६॥

विदेह क्षेत्र के उत्तर में, दक्षिण रहे समान।
तीन पर्वत क्षेत्र भी, दर्पण जैसा मान॥३.२६.११२॥

विदेह क्षेत्र से उत्तर के तीन पर्वत और तीन क्षेत्र दक्षिण के पर्वतों और क्षेत्रों के समान विस्तार वाले है।

The mountains and regions in north are equal to south.

भरतैरावतयोवृद्धिह्रासौ
षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम्॥२७॥

उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, बढ़ता घटता काल।
भरत और एरावत में, होता यही कमाल॥३.२७.११३॥

छह कालों से युक्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के द्वारा भरत और ऐरावत क्षेत्र में जीवों के अनुभवादि की वृद्धि-हानि होती रहती है।

In Bharata and Aeravat there is rise and fall of six kala.

ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिता:॥२८॥

हैमवत, हरि, विदेह भी, परिवर्तन नहीं काल।
रम्यक सह हैरण्यवत, स्थित है अनन्त साल॥३.२८.११४॥

भरत और ऐरावत को छोड़कर दूसरे क्षेत्रों में एक ही अवस्था रहती है। उनमें काल का परिवर्तन नहीं होता।

The other regions have stable kala.

एकद्वित्रिपल्योपमस्थितियो हैमवतकहारिवर्षक दैवकुरवका:॥२९॥

एक दो और तीन पल्य, आयु सबकी जान।
हैमवत, हरिवर्ष, देवकुरु, तिर्यंच और इंसान॥३.२९.११५॥

हैमवत, हरिवर्ष, और देवकुरु के मनुष्य, तिर्यंच क्रम से एक पल्य, दो पल्य और तीन पल्य की आयु वाले होते है।

The age of humans and animals in Haimvatak, harivarshak and devakuru are of one, two and three palyas respectively.

तथोत्तराः॥३०॥

एक दो और तीन पल्य, आयु सबकी जान।
उत्तर दक्षिण की तरह, तिर्यंच और इंसान॥३.३०.११६॥

उत्तर के क्षेत्रों में रहने वाले मनुष्य भी दक्षिण में स्थित हैमवतादि के मनुष्यों के समान आयु वाले होते है।

The conditions are same in north.

विदेहेषु सङ्खयेयकाला:॥३१॥

विदेह क्षेत्र में मनुष्य की, आयु होत संख्यात।
हरदम चतुर्थ काल रहे, जिनवाणी की बात॥३.३१.११७॥

विदेह क्षेत्र में मनुष्यों की आयु संख्यात वर्ष की होती है।

In the Videha regions life of human beings is in countable years.

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभाग:॥३२॥

भरत क्षेत्र की बात कहूँ, समझ ज़रा विस्तार।
एक सौ नब्बेवा अंग है, जम्बू द्वीप विचार॥३.३२.११८॥

भरत क्षेत्र का विस्तार जम्बूद्वीप का एक सौ नब्बेवा भाग है।

The width of Bharata is one hundred and ninetieth part of Jambudvipa.

द्विर्धातकीखण्डे॥३३॥

द्वीप धातकीखण्ड भी, मानव का है वास।
दूना जम्बूद्वीप से, पर्वत नदी आवास॥३.३३.११९॥

धातकीखण्ड नाम के दूसरे द्वीप में क्षेत्र, कुलाँचे, मेरु, नदी इत्यादि सब पदार्थों की रचना जम्बूद्वीप से दूनी दूनी है।

In Dhatikhanda it is double.

पुष्करार्द्धे च॥३४॥

आधे पुष्करद्वीप में, धातकीखण्ड समान।
दूना जम्बूद्वीप से, पर्वत नदियाँ जान॥३.३४.१२०॥

पुष्करार्द्ध द्वीप में भी सब रचना जम्बूद्वीप की रचना से दूनी दूनी है।

In the half of Puskaradvipa also same as Dhatakikhanda.

प्राङ्मानुषोत्तररान्मनुष्या:॥३५॥

मानुषोत्तर पर्वत है, पुष्कर मध्य विचार।
मानव ढाई लोक में, रहे ना पर्वत पार॥३.३५.१२१॥

मानुषोत्तर पर्वत तक अर्थात् अढ़ाई द्वीप में ही मनुष्य होते है। मानुषोत्तर पर्वत से परे ऋद्धिधारी मुनि या विद्याधर भी नहीं जा सकते है।

Human beings can be till Manusottara mountain which divides Pusharadvip.

आर्या म्लेच्छाश्च॥३६॥

मनुष्य के भी भेद कहे, होते दोय प्रकार।
आर्य और म्लेच्छ है, जो निवास अनुसार॥३.३६.१२२॥

आर्य और म्लेच्छ के भेद से मनुष्य दो प्रकार के है।

There are 2 types of human beings. The civilised and barbarians.

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः॥३७॥

पन्द्रह कर्म भूमियाँ, ढाई द्वीप विस्तार।
विदेह ऐरावत भरत, कुरु न कर्म व्यवहार॥३.३७.१२३॥

देवकुरु और उत्तरकुरु को छोड़कर ढाई द्वीप में कुल पन्द्रह कर्म भूमियाँ है। पाँच भरत, पाँच ऐरावत और पाँच विदेह।

Bharat, Airavat and Videha except Devkuru and uttarkuru are karmabhumi. There are 5 each of Bharat, airavat and Videh so total 15 karmabhumi.

नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते॥३८॥

उत्कृष्ट आयु तीन पल्य, मनुष्य का आवास।
जघन्य अन्तर्मुहूर्त है, करो कर्म का नाश॥३.३८.१२४॥

मनुष्यों की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्य और जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त की है।

The max life of human being is three palya and minimum is antarmuhurta.

तिर्यग्योनिजानां च॥३९॥

उत्कृष्ट आयु तीन पल्य, तिर्यंच का भी वास।
जघन्य अन्तर्मुहूर्त है, जिनवाणी विश्वास।३.३८.१२५॥

तिर्यंचों की भी उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्य और जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है।

Age is same for the animals.

Chapter 4 - The Celestial Beings – देवलोक

देवाश्चतुर्णिकायाः॥४.१॥

भवनवासी व्यन्तर है, देव चार प्रकार।
ज्योतिष वैमानिक रहे, जिन वाणी के तार॥४.१.१२६॥

देव चार समूह वाले है। भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष, वैमानिक।

The celestial beings are of four classes.

- **Residential Deities**
- **Peripatetic Deities**
- **Stellar Deities**
- **Heavenly Deities**

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या:॥४.२॥

पहले तीन देव कहा, लेश्या होती चार।
कृष्ण, नील, कापोत भी, पीत लेश्य संचार॥४.२.१२७॥

भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष देवों में कृष्ण, नील, कापोत व पीत लेश्या होती है।

The psychic aura of first 3 classes is black, blue, grey and yellow.

दशाष्टपंचद्वादशविकल्पा: कल्पोपपन्नपर्यन्ता:॥४.३॥

चार देवों के क्रमश:, कल्पोपपन्न तक भेद।
दस आठ और पाँच है, बारह देव प्रभेद॥४.३.१२८॥

कल्पोपपन्न देवों तक क्रमश: दस, आठ, पाँच और बारह भेद होते है।

They are of ten, eight, five and twelve classes upto heavenly beings.

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकश:॥४.४॥

दस प्रकार के देवता, राजा इन्द्र है देव।
त्रायस्त्रिंश सामानिक भी, रहे पारिषद देव॥
लोकपाल व आत्मरक्ष, है अनीक भी देव।
प्रकीर्णक आभियोग्य भी, किल्विषिक भी देव॥४.४.१२९॥

इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक ये दस प्रकार है।

There are ten grades in each of these classes.

- **Lord**
- **Equals**
- **Ministers**
- **Courtiers**
- **Bodyguards**
- **Police**
- **Army**
- **Citizens**
- **Servants**
- **Menials**

त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः॥४.५॥

व्यन्तर और ज्योतिष में, दो देव नहीं चाल।
त्रायस्त्रिंश रहते नहीं, रहे ना लोकपाल॥४.५.१३०॥

व्यन्तरों और ज्योतिष देवों में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल नहीं होते।

The peripatetic and the stellar deities are without the ministers and the police.

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥४.६॥

होते दो दो इन्द्र है, व्यन्तर भवननिवास।
प्रतिइन्द्र भी दो रहे, इन देवों में खास ॥४.६.१३१॥

पहले के दो, भवनवासी और व्यन्तर, में दो दो इन्द्र होते है।

In the first two orders there are two lords.

कायप्रवीचारा आ ऐशानात्॥४.७॥

कामसेवन को कहते, देव का प्रवीचार।
ईशान स्वर्ग तक रहे, तन से जुड़ते तार॥४.७.१३२॥

ईशान स्वर्ग तक (अर्थात् भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष और पहले व दूसरे कल्प के देव) शरीर से काम सेवन करते है।

Upto eishan kalpa they enjoy compilation.

शेषा: स्पर्शरुपशब्दमन: प्रवीचारा॥४.८॥

स्पर्श रुप मन शब्द भी, शेष करते काम।
तन की न आवश्यकता, प्रवीचार का नाम॥४.८.१३३॥

शेष स्वर्गों में क्रमश: स्पर्श, रुप, शब्द और मन से काम सेवन करते है।

The other deities derive pleasure by touch, sight, sound and thought.

परेऽप्रवीचारा:॥४.९॥

अहमिन्द्र का वास है, कल्पोपपन्न पार।
काम सेवन चाह नहीं, ब्रह्मचर्य व्यवहार॥४.९.१३४॥

ऊपर के अहमिन्द्रों में काम सेवन होता ही नहीं है।

The rest are without sexual desire.

भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीप दिक्कुमाराः॥४.१०॥

भवनवासी देव कहे, असुर व नागकुमार।
विद्युत् सुपर्णकुमार भी अग्नि व वातकुमार॥स्तनितकुमार भवन रहे, उदधि द्वीपकुमार।
दिक्कुमार भी भवन रहे, भवन के दस प्रकार॥४.१०.१३५॥

भवनवासी देव - असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार।

The residential deities are of 10 types:

- **Asurakumar**
- **Nagakumar**
- **Vidyutkumar**
- **Suparnakumar**
- **Agnikumar**
- **Vatakumar**
- **Stanitakumar**
- **Udadhikumar**
- **Dvipakumar**
- **Dikkumar**

व्यन्तरा: किन्नरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचा:॥४.११॥

व्यन्तर आठ प्रकार के, किन्नर, किम्पुरुष जान।
महोरग व गन्धर्व भी, शंभु वृत्ति पहचान॥
है यक्ष और राक्षस भी, भूत सहीत पिशाच।
कौतुहल की प्रवृत्ति है, दे सकते नहीं आँच॥४.११.१३६॥

व्यन्तर देव आठ प्रकार के है।

- किन्नर
- किम्पुरुष
- महोरग
- गन्धर्व
- यक्ष
- राक्षस
- भूत
- पिशाच

- The peripatetic devas comprise of following 8 types:
- kinnara
- Kimpurusa
- Mahoraga
- Gandharva
- Yaksa
- Raksasa
- Bhuta
- Pisacha

ज्योतिष्का: सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्र प्रकीर्णकतारकाश्च॥४.१२॥

ज्योतिष देव पाँच है, सूर्य चन्द्र पहचान।
ग्रह, तारे नक्षत्र भी, जिन वाणी का ज्ञान॥४.१२.१३७॥

ज्योतिष देव पाँच प्रकार के है।

- सूर्य
- चन्द्रमा
- ग्रह
- नक्षत्र
- तारे

The stellar devas comprise of 5 devas:

- **sun**
- **Moon**
- **Planets**
- **Constellations**
- **Scattered Stars**

मेरुप्रदक्षिणा नित्यगत्यो नृलोके॥४.१३॥

ज्योतिष देते प्रदक्षिणा, सतत गति नहीं रोक।
मेरुपरवत इर्द-गिर्द, है जंह मानवलोक॥४.१३.१३८॥

मनुष्य लोक में मेरुपर्वत की प्रदक्षिणा देते हुए निरन्तर गति करते रहते है।

Stellar deities keep circling around meru mountain.

तत्कृतः कालविभागः ॥४.१४॥

ज्योतिष देव गमन करे, होती गणना काल।
यही निरन्तरता गणित, ज्योतिषों की चाल॥४.१४.१३९॥

काल का विभाग इसके गमन के आधार पर ही होता है।

The division and calculations of time is caused by these.

बहिरवस्थिताः॥४.१५॥

बाहर ढाई द्वीप के, ज्योतिष देव अनेक।
देव स्थिर बन के रहे, ध्रुव से है प्रत्येक॥४.१५.१४०॥

ढाई द्वीप के बाहर ये ज्योतिष देव स्थिर रहते है।

Stellar deities outside adhaidwipa (manusya Lok) are stationary.

वैमानिका: ॥४.१६॥

वैमानिक की बात है, विचरण का विस्तार।
रहन सहन विमान रहे, है विमान आकार॥४.१६.१४१॥

विमानों में रहनेवाले देवों को वैमानिक देव कहते है।

Now learn about heavenly beings or vaimanika Dev.

कल्पोपपन्ना: कल्पातीताश्च॥४.१७॥

वैमानिक प्रकार दो, कल्पोपपन्न को जान।
एक सोलहवें स्वर्ग तक, कल्पातीत पहचान॥४.१७.१४२॥

ये वैमानिक देव दो प्रकार के है। कल्पोपपन्न और कल्पातीत।

Vaimanik are of two types. Born in kalpa and beyond the kalpas.

उपर्युपरि ॥४.१८॥

ऊपर ऊपर है सभी, सोलह स्वर्ग विधान।
ग्रैवेयक व अनुदिश भी, अंत अनुत्तर जान॥४.१८.१४३॥

सोलह स्वर्ग के आठ युगल, नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश और पाँच अनुत्तर क्रम से ऊपर ऊपर है।

They are one above the other.

सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठशुक्र महाशुक्रशातारसहस्त्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्त जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धो च॥४.१९॥

बारह स्वर्ग तक छह युगल, वैमानिक है देव।
सौधर्म ऐशान भी, सनत्- माहेन्द्र देव॥
ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर भी, लांतव- कापिष्ठ यार।
शुक्र और महाशुक्र भी, शतार व सहस्त्रार ॥
है अगले दो स्वर्ग में, आनत- प्राणत देव।
फिर अगले दो स्वर्ग में, आरण- अच्युत देव॥
नव ग्रैवेयक विमान में, नव अनुदिश विमान।
देव अनुचर पाँच है, विजय वैजयन्त जान॥
जयन्त व अपराजित है, अनुतर देव विमान।
सर्वार्थसिद्धि है मध्य में, वैमानिक पहचान॥४.१९.१४४॥

बारह स्वर्गों में ६ युगल वैमानिक देव

सौधर्म- ऐशान

सनत्कुमार - माहेन्द्र

ब्रह्म - ब्रह्मोत्तर

लांतव- कापिष्ठ

शुक्र - महाशुक्र

शतार- सहस्त्रार

दो स्वर्गों में आनत- प्राणत

दो स्वर्गों में आरण- अच्युत

नव ग्रैवेयक विमानों में

नव अनुदिश विमानों में

अनुतर विमानों में ५ देव

विजय

वैजयन्त

जयन्त

अपराजित

सर्वार्थसिद्धि

6 pairs of deva lives in first 12 heavens

- **Saudharma- Aisana**
- **Sanatkumara- mahendra**
- **Brahma- Brahmottara**
- **Lantava- kapistha**
- **Sukra- mahasukra**
- **Satara- Sahasrara**
- **2 heavens Anata & Pranata**
- **2 heavens Arana & Acyuta**
- **Nine greveyak**
- **Nine anudish**

- **Five anuchar**
- **vijaya**
- **Vaijayanta**
- **Jayanta**
- **Aparajita**
- **Sarvarthasiddhi**

स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः॥४.२०॥

स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्याविशुद्धि पाय।
अवधिविषय इन्द्रिय सहित, ऊपर बढ़ता
जाय॥४.२०.१४५॥

वैमानिक देवों में स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्याविशुद्धि, इन्द्रियविषय और अवधिविषय की अपेक्षा ऊपर ऊपर के देव अधिक है।

As you go up there is increase with regard to lifetime, power, happiness, brilliance, purity in lesya, capacity of senses and range of clairvoyance knowledge.

गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीना:॥२१॥

ऊपर बढ़ जब देवगति, कम कम होता जान।
गति, शरीर व परिग्रह भी, कम होता
अभिमान॥४.२१.१४६॥

गति, शरीर, परिग्रह और अभिमान की अपेक्षा ऊपर ऊपर के देव हीन है।

There is decrease with regard to motion, stature, attachment and pride.

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु॥२२॥

पीत लेश्या दो युगल, पद्म तीन फिर पाय।
शुक्ल लेश्या शेष की, ऊपर शुद्ध हो जाय॥४.२२.१४७॥

दो, तीन कल्प युगलों में तथा शेष वैमानिकों में क्रमशः पीत, पद्म और शुक्ल लेश्यायें होती है।

Yellow lesya in first two kalp duals then pink in next three kalp duals and white lesya in rest vaimanik deities.

प्राग्ग्रैवेयकेभ्य: कल्पा:॥४.२३॥

वैमानिक सोलह स्वर्ग, कहे कल्प आवास।
ग्रैवयेक के पूर्व में, कल्प ही हो निवास॥४.२३.१४८॥

ग्रैवयेकों से पहले के वैमानिक देवों के आवास कल्प कहलाते है।

Prior to graiveyaks these are called Kalpas.

ब्रह्मलोकालया लोकान्तिकाः॥४.२४॥

ब्रह्म लोक कल्प पाँचवा, लोकान्तिक का वास।
शुभकार्य में गमन करे, और ना है निवास॥४.२४.१४९॥

ब्रह्म लोक नाम का पाँचवा कल्प है लोकान्तिक देव वहाँ वास करते है।

Laukantikas resides in brahmaloka.

सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च॥४.२५॥

सारस्वत आदित्य है, वह्नि, अरुण, गर्दतोय।
तुषित व अव्याबाध भी, लौकान्त अरिष्ट होय॥४.२५.१५०॥

सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट ये लौकान्तिक देव है।

Laukantik deities are of 8 types.

- **Saraswat**
- **Aditya**
- **Vanhi**
- **Arun**
- **Gardtoy**
- **Tushit**
- **Avyabadha**
- **Arista**

विजयादिषु द्विचरमा:॥४.२६॥

दो चरम बाक़ी रहते, देव विजयादि चार।
देव अनुतर कहे उन्हे, दो भव में हो पार॥४.२६.१५१॥

विजयादि चार अनुतर देव दो मनुष्य भव वाले होते है।

Four Anutar deities, Vijaya etc have 2 more birth pending in human cycle before liberation.

औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः॥४.२७॥

देव नारकी छोड़ कर, मनुज अलग ही जान।
शेष जीव संसार के, तिर्यंच है पहचान॥४.२७.१५२॥

उपपाद जन्म वाले अर्थात् देव और नारकी तथा मनुष्यों को छोड़कर शेष जो संसारी जीव है वे सब तिर्यंच है।

All living beings are in animal category except celestial, infernal and humans.

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपम
त्रिपल्योपमार्धहीनमिता: ॥४.२८॥

आयु असुर नाग सुपर्ण, द्वीप व छह कुमार।
एक सागर, तीन पल्य, कम आधा हर बार॥४.२८.१५३॥

भवनवासियों में असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, द्वीपकुमार और बाक़ी के बचे छह कुमारों की आयु क्रमश: एक सागर, तीन पल्य, उसके बाद आधा आधा पल्य कम करते जावो ऐसी है।

The life of residential deities is as follow:

- **Asur Kumar one sagar**
- **Nagkumar three palya**
- **Suparnakumar two and half palya**
- **Dwipkumar two playa**
- **Rest six kumar one and half palya**

सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके॥४.२९॥

सौधरमो ऐशान की, देव स्थिति पहचान।
दो सागर से कुछ अधिक, आयु देव की जान॥४.२९.१५४॥

सौधर्म और ऐशान स्वर्ग के देवों की आयु दो सागर से कुछ अधिक है।

In saudharma and Aisana kalpas the maximum life is a little I’ve two sagaropamas

सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त॥४.३०॥

सात सागर आयु अधिक, माहेन्द्र सानत्कुमार।
वैमानिक ये देव है, आयु उत्कृष्ट विचार॥४.३०.१५५॥

सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्ग में देवों की उत्कृष्ट आयु सात सागर से कुछ अधिक है।

In sanatkumara and mahendra it is seven sagaropamas

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु॥४.३१॥

तीन सात नव जोड़ दो, ग्यारह तेरह जोड़।
पन्द्रह सागर से अधिक, देव आयु बेजोड़॥४.३१.१५६॥

पूर्वसूत्र में कहे युगलों की आयु से (सात सागर) क्रमपूर्वक तीन, सात, नौ, ग्यारह, तेरह और पन्द्रह सागर अधिक आयु उसके बाद के स्वर्गों में है।

Brahma- Brahmottara 10 sagarapomas
Lantava- kapistha 14 Sagaropamas
Sukra- mahasukra 16 Sagaropamas
Satara- Sahasrara 18 Sagaropamas
Anata & Pranata 20 Sagaropamas
Arana & Acyuta 22 Sagaropamas

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥४.३२॥

इक इक सागर जोड़ना, नवग्रैयक जो देव।
अनुदिश और अनुतर भी, सागर आयु सुदेव॥४.३२.१५७॥

आरण और अच्युत स्वर्ग से ऊपर के नवग्रैयकों में, नव अनुदेशों में, विजय इत्यादि विमानों में और सर्वार्थसिद्धि विमानों में देवों की आयु एक-एक सागर अधिक है।

Maximum Life of 9 graiveyakas is from 23 to 31 increasing one Sagaropamas each
9 Anudish 32 Sagaropamas
5 anutar 33 Sagaropamas

अपरापल्योपममधिकम्॥४.३३॥

जघन्य आयु बात कहे, सौधरमों ऐशान।
एक पल्य से कुछ अधिक, प्रथम युगल पहचान॥४.३३.१५८॥

सौधर्म और ऐशान कल्प में जघन्य स्थिति कुछ अधिक एक पल्य है।

Minimum life of first two vaimanik deity Saudharma and Eishaan is little more than one palya.

परतः परतः पूर्वा पूर्वानन्तराः॥४.३४॥

पूर्व उत्कृष्ट जघन्य हो, ऊपर चढ़ता जाय।
वैमानिक जो कल्प में, उमास्वाती बतलाय॥४.३४.१५९॥

पहले के अर्थात् नीचे के कल्प युगल में जो उत्कृष्ट स्थिति है वह उनसे अगले अर्थात् ऊपर के कल्प युगल में जघन्य स्थिति है।

The maximum life of the immediately preceding palya is the minimum of next kalpa.

नारकाणां च द्वितीयादिषु॥४.३५॥

नरक आयु क्या है प्रभु, शिष्य चाहे ज्ञान।
देव जैसी व्यवस्था, बतलाये भगवान॥४.३५.१६०॥

द्वितीय आदि नरकों की स्थिति भी ऐसी ही समझनी चाहिए।

The same with regard to infernal beings from the second infernal region onwards.

दशवर्षसहस्त्राणि प्रथमायाम्॥४.३६॥

जघन्य आयु प्रथम नरक, वर्ष है दस हज़ार।
जाने की है चाह नहीं, कर्मों का व्यापार॥४.३६.१६१॥

पहले नरक की जघन्य स्थिति दस हज़ार वर्ष है।

Minimum life span of first infernal region is 10000 years.

भवनेषु च॥४.३७॥

सबसे छोटे देव जो, भवनवास संसार।
कम से कम आयु उनकी, वर्ष है दस हज़ार॥४.३७.१६२॥

भवनवासियों की भी जघन्य आयु दस हज़ार वर्ष है।

Minimum life span of residential deities is also 10000 years.

व्यन्तराणां च॥४.३८॥

व्यन्तर की भी जानना, जघन्य आयु उस पार।
भवनवास ही की तरह, वर्ष है दस हज़ार॥४.३८.१६३॥

व्यन्तरों की भी जघन्य स्थिति दस हज़ार वर्ष की है।

Minimum life span of vyantara (peripatetic) deities is also 10000 years.

परापल्योपममधिकम्॥४.३९॥

व्यन्तर की उत्कृष्ट स्थिति, कहते है अब जान।
एक पल्य से कुछ अधिक, आयु अधिकतम मान॥४.३९.१६४॥

व्यन्तरों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्य से कुछ अधिक है।

Maximum life span of peripatetic deities is little ove one palyopama.

ज्योतिष्काणां च॥४.४०॥

ज्योतिष उत्कृष्ट है स्थिति, कहते है अब जान।
एक पल्य से कुछ अधिक, आयु अधिकतम मान॥४.४०.१६५॥

ज्योतिष देवों की भी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्य से कुछ अधिक है।

Stellar devas also have maximum life span is little over one palyopama.

तदष्टभागोऽपरा॥४.४१॥

ज्योतिष की जघन्य स्थिति, कहते है अब जान।
उत्कृष्ट का भाग आठवाँ, आयु न्यूनतम मान॥४.४१.१६६॥

ज्योतिष देवों की जघन्य स्थिति उनकी उत्कृष्ट स्थिति के आठवें भाग है।

Minimum life span of stellar deities is one eight of maximum life.

लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४.४२॥

लौकान्तिक जो देव है, आठ सागर निवास।
उत्कृष्ट जघन्य भेद नहीं, ब्रह्म लोक में वास॥४.४२.१६७॥

सभी लौकान्तिक देवों की स्थिति आठ सागर है। इनमें उत्कृष्ट व जघन्य का भेद नहीं है।

For laukantikas deities minimum and maximum life span is eight Sagaropamas.

Chapter 5 - The non-living substances - अजीव तत्त्व

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥

धर्म और अधर्म कहा, अजीव जैसी काय।
पुद्गल और आकाश भी, अजीव की पर्याय॥५.१.१६८॥

धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल ये अजीवकाय है।

Medium of motion (Dharm), medium of rest (Adharm), space and matter are non-soul bodies.

द्रव्याणि ॥२॥

धर्म और अधर्म कहा, होता द्रव्य प्रकार।
पुद्गल और आकाश भी, रहता द्रव्य विचार ॥५.२.१६९॥

धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल ये द्रव्य है।

Medium of motion (Dharm), medium of rest (Adharm), space and matter are substances (dravya).

जीवाश्च ॥३॥

होते धर्म अधर्म जो, पुद्गल और आकाश।
जीव भी द्रव्य प्रकार है, करले यह आभास॥५.३.१७०॥

जीव भी द्रव्य है।

The souls are also substances.

नित्यावस्थितान्यरुपाणि ॥४॥

उक्त द्रव्य नित्य है, अवस्थित है और अरुपी है।

जीव अजीव अधर्म धर्म, काल और आकाश।
नित्य अवस्थित अरुपी, द्रव्यगुणी प्रकाश॥५.४.१७१॥

The substances are eternal, fixed and colourless.

रुपिणः पुद्गलाः ॥५॥

पुद्गल रूपी द्रव्य है, मूर्तिक व आकार।
शेष द्रव्य में वर्ण नहीं, जिन भगवान विचार॥५.५.१७२॥

पुद्गल रुपी है।

Matter (pudgal) is with form.

आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥

धर्म अधर्म इक इक ही, है इक भी आकाश।
शेष द्रव्य है एक नहीं, रख ऐसा विश्वास॥५.६.१७३॥

आकाश तक एक एक द्रव्य है।

Medium of motion (Dharm), medium of rest (Adharm) and space (Aakash) are indivisible wholes.

निष्क्रियाणि च ॥७॥

धर्म अधर्म क्रिया नहीं, है निष्क्रिय आकाश।
शेष द्रव्य विचरण करे, करते इनमें वास॥५.७.१७४॥

धर्म, अधर्म व आकाश निष्क्रिय भी है।

Medium of motion (Dharm), medium of rest (Adharm) and space (Aakash) are also without activity.

असंख्येयाः प्रदेशाः धर्माधर्मैकजीवानाम् ॥८॥

धर्म और अधर्म यहाँ, असंख्यात प्रदेश।
उसी तरह इक जीव के, असंख्यात ही देश ॥५.८.१७५॥

धर्म, अधर्म और एक जीव के असंख्यात प्रदेश है।

Medium of motion (Dharm), medium of rest and one soul have innumerable spaces.

आकाशस्यानन्ता: ॥९॥

जिसका अंत होवे नहीं, अनन्त वो कहलाय।
प्रदेश अनन्त आकाश में, सब द्रव्य समा जाय॥५.९.१७६॥

आकाश के अनन्त प्रदेश है।

Space (Aakash) have infinite units.

संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥१०॥

पुद्गल सदा प्रदेश तो, असंख्यात संख्यात।
अनन्त प्रदेश पुद्गल कहे, जिन वाणी की बात॥५.१०.१७७॥

पुद्गलों के संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेश है।

Matter have numerable, innumerable and infinite space points (pradesh).

नाणो: ॥११॥

परमाणु का भाग नहीं, कोई नहीं प्रदेश।
स्वयं ही आदि अंत है, जान उसे अप्रदेश॥५.११.१७८॥

अणु के अन्य प्रदेश नहीं होते।

Atom is indivisible unit hence no space point.

लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥

जीव अजीव धर्म अधर्म, काल करे आवास।
सभी द्रव्य अवगाह करे, उसे कहो आकाश॥५.१२.१७९॥

इन सभी द्रव्यों का लोकाकाश में अवगाह (स्थान) है।

These substances are located in the space of universe.

धर्माधर्मयो:कृत्स्ने ॥१३॥

धर्म और अधर्म द्रव्य का, फैले समग्र लोक।
स्थान लोकाकाश है, रह ना सके अलोक॥५.१३.१८०॥

धर्म और अधर्म द्रव्य का अवगाह समग्र लोकाकाश में है।

The media of motion and rest spread in entire universe (Lok- Aakash).

एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम्॥१४॥

एक प्रदेश, असंख्यात भी, पुद्गल का अवगाह।
एक क्षेत्र अवगाह भी, पुद्गल करे प्रवाह॥५.१४.१८१॥

पुद्गलो का अवगाह एक प्रदेश से लेकर असंख्यात प्रदेशो तक हो सकता हैं।

The forms of matter occupy from one unit of space to innumerable.

असंख्येयभागादिषु जीवानाम्॥१५॥

असंख्यातवे भाग में, जीव रहे आकाश।
रह सके सम्पूर्ण भी, फैले लोकाकाश॥५.१५.१८२॥

जीवों का अवगाह लोकाकाश के असंख्यातवे भाग से लेकर सम्पूर्ण लोकाकाश तक हो सकता है।

The souls inhabit from one of innumerable parts of the universe space.

प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत्॥१६॥

जीव प्रदेश असंख्य भी, ज्यूँ प्रदीप प्रकाश।
संकोच व विस्तार करे, प्रदेश लोकाकाश॥५.१६.१८३॥

प्रदेशों के संकोच और विस्तार के कारण लोकाकाश के समान असंख्यात प्रदेशवाला भी एक जीव प्रदीप की तरह असंख्येय एक भाग आदि में रह जाता है।

The soul can contract or expand its space points just like light of lamp.

गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ॥१७॥

कार्य ये करना नहीं, निमित्त ही उपकार।
धर्म और अधर्म करे, गति स्थिति उपकार॥५.१७.१८४॥

गति और स्थिति क्रमशः धर्म और अधर्म के उपकार है।

Motion and rest is benevolence of dharma and adharma respectively.

आकाशस्यावगाहः॥१८॥

धर्म अधर्म जीव पुद्गल, अवगाहन आकाश।
रहने को स्थान दे, उपकार का प्रकाश॥५.१८.१८५॥

अवगाह (स्थान) देना आकाश द्रव्य का उपकार है।

Benevolence of space (Aakash) is to provide accommodation.

शरीरवाङ्मन:प्राणापना: पुद्गलानाम्॥१९॥

शरीर व मन और वचन, पुद्गल के उपकार। श्वासोच्छ्वास भी मिली, पुद्गल का सहकार॥५.१९.१८६॥

शरीर, मन, वचन और श्वासोच्छ्वास पुद्गल के उपकार है।

Body, mind, organ of speech and respiration is benevolence of matter (pudgal).

सुखदःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥

सुख और दुख जीवन में, पुद्गल के उपकार।
जीवन और मरण करे, पुद्गल की पुचकार॥५.२०.१८७॥

इसी प्रकार सुख, दुख, जीवन और मरण में निमित्त होना भी पुद्गलों का जीव के प्रति उपकार है।

Benevolence of matter is also to contribute to pleasure, suffering, life and death of living beings.

परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥

अनुकूल प्रतिकूलता, आपस में उपकार।
एक दूसरे के निमित्त, जीव धर्म का सार॥५.२१.१८८॥

लौकिक अनुकूलता व प्रतिकूलता में परस्पर निमित्त होना यह जीवो का उपकार है।

The benevolence of soul is to help each other.

वर्तनापरिणामक्रिया: परत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥

वर्तना, परिणाम क्रिया, परत्व अपरत्व जान।
निमित्त बनता काल है, जिनवर का है ज्ञान॥५.२२.१८९॥

वर्तना, परिणाम, क्रिया, परत्व और अपरत्व में निमित्त होना ये कालद्रव्य का सभी द्रव्यों पर उपकार है।

Be instrumental for all other substances in their continuity of being, in their changes, movements, priority and non-priority in time, are the functions of time.

स्पर्शरसगंधवर्णवन्तः पुद्गलाः॥२३॥

पुद्गल का है लक्षण क्या, ले इनको पहचान।
स्पर्श, रस, और गंध है, वर्ण भी इसका ज्ञान॥५.२३.१९०॥

पुद्गल स्पर्श, रस, गंध और वर्ण वाला है।

The matter is characterised by touch, taste, smell and colour.

शब्दबंधसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभ्‍दतमश्छायाऽऽतपोद्योतवन्तश्च॥२४॥

शब्द, बन्ध, स्थूल सूक्ष्म, संस्थान अंधकार।
छाया, आतप, उद्योत भी, पुद्गल करे साकार॥५.२४.१९१॥

तथा पुद्गल शब्द, बन्ध, सूक्ष्मत्व, स्थूलत्व, संस्थान, अंधकार, छाया, आतप और उद्योत वाले होते है।

Sound, union, fineness, grossness, shape, division, darkness, image, sunshine and moon light are also characteristic of matters.

अणव: स्कन्धाश्च॥२५॥

पुद्गल द्रव्य स्कंध अणु, दो है भेद प्रकार।
भेद पुद्गल द्रव्य यही, जिन देव का विचार॥५.२५.१९२॥

पुद्गल द्रव्य अणु व स्कंध के भेद से दो प्रकार का है।

Atom and molecules are two main divisions of matter.

भेदसंघातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥२६॥

स्कन्ध होत उत्पन्न है, होय भेद संघात।
भेद अर्थ है तोड़ना, जोड़े हो संघात॥५.२६.१९३॥

भेद से, संघात से और भेद-संघात से स्कन्ध उत्पन्न होते है।

Molecules are formed by division, union and division-union.

भेदादणुः ॥२७॥

नहीं भेद जब कर सके, उत्पत्ति अणु की जान।
संघात से अणु न रहे, अणु अभेद पहचान॥५.२७.१९३॥

अणु की उत्पत्ति स्कंधों के भेद से होती है संघात से नहीं।

The atom is produced by division.

भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः ॥२८॥

स्कन्ध जो हो देखना, लगे भेद संघात॥
चक्षु इन्द्रिय विषय बने, जिन वाणी की बात॥५.२८.१९५॥

भेद और संघात दोनों से स्कंध चक्षु इन्द्रिय का विषय बनता है।

Molecules are perceived by eyes by doing division and union both.

सत् द्रव्यलक्षणम्॥२९॥

सत् मतलब अस्तित्व रहे, द्रव्य लक्षण पहचान।
जो कभी मिटता नहीं, द्रव्य भेद विज्ञान॥

द्रव्य का लक्षण सत् (अस्तित्व) है।

Existence is the characteristic of substance.

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्॥३०॥

सत् को हो जब जानना, तीन अवस्था जान।
उत्पाद, द्रव्य, ध्रौव्य भी, निरन्तरता पहचान॥५.३०.१९७॥

जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है, वह सत् है।

Existence (Sat) is characterised by appearance, disappearance and permanence.

तद्भावाव्ययं नित्यम्॥३१॥

द्रव्य में है नित्यता, होता नहीं अभाव।
नित्य भाव का व्यय नहीं, नित्यता ही स्वभाव॥५.३१.१९८॥

अपने भाव से जो अलग नहीं होता वही नित्यता है।

Permanence is essential characteristic of the substance. It never destroys.

अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥३२॥

मुख्य को अर्पित कहा, अनर्पित होता गौण।
सिद्ध हो वस्तु अस्तित्व, भिन्न भिन्न है कोण॥५.३२.१९९॥

मुख्य को अर्पित और गौण को अनर्पित कहते है। इससे वस्तु की अस्तित्व सिद्ध होता है।

Through main and minor contradictory different point of views are established.

स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः॥३३॥

चिकनापन है स्निग्धता, रुखा रुक्ष कहलाय।
बंध का ये कारण बने, आपस में बंध जाय॥५.३३.२००॥

स्निग्धत्व (चिकना) और रूक्षत्व (रुखा) से पुद्गलो का बंध होता है।

Sticky and dry properties binds atoms and molecules.

न जघन्यगुणानाम्॥३४॥

बंध होना संभव नहीं, जघन्य पुद्गल जान।
निकृष्ट को जघन्य कहा, बंध नहीं पहचान॥५.३४.२०१॥

पर जघन्यगुणवाले पुद्गलों का बंध नहीं होता।

There can't be any combination between the lowest degree of two properties.

गुणसाम्ये सदृशानाम्॥३५॥

बंध होना संभव नहीं, गुण जो रहे समान।
स्निग्ध- स्निग्ध व रुक्ष-रुक्ष, जब हो एक समान॥५.३५.२०२॥

गुणों की समानता रहने पर भी बंध नहीं होता।

There is no combination possible between equal degrees of same properties.

द्वयधिकादिगुणानाम् तु॥३६॥

होता बंध संभव तभी, द्वी अधिक गुण जान।
स्निग्ध -स्निग्ध, रुक्ष-रुक्ष हो, या रहे गुण असमान॥५.३६.२०३॥

दो अधिक गुण वाले के साथ ही बंध होता है।

Combination is possible with two different degrees.

बन्धेऽध्कौ पारिणामिकौ च॥३७॥

परिणमन का नियम है, बंध करे विस्तार।
अधिकगुण वर्चस्व रहे, न्यूनगुण को मार॥५.३७.२०४॥

बन्ध होने पर दो अधिकगुणवाला न्यूनगुणवाले को अपने रुप परिणमन करा लेता है।

In the process of combination the higher degree transform the lower ones.

गुणपर्ययवत् द्रव्यम्॥३८॥

गुण भी है द्रव्य में, द्रव्य की पर्याय।
द्रव्य के दो चिन्ह है, द्रव्य में रम जाय॥५.३८.२०५॥

गुण और पर्यायवाला द्रव्य होता है।

That which has qualities and modes is a substance.

कालश्च॥३९॥

जीव अजीव पुद्गल धरम द्रव्य आकाश।
काल को भी द्रव्य कहा, छह द्रव्य का वास॥५.३९.२०६॥

काल भी द्रव्य है।

Time also is a substance.

सोऽनन्तसमयः॥४०॥

काल के दो भेद है, निश्चय और व्यवहार।
समय इकाई काल की, अनन्त काल विचार॥५.४०.२०७॥

यह काल द्रव्य अनन्त समय वाला है।

Time substance is consisting of infinite instants (samay).

द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः॥४१॥

गुण का आश्रय द्रव्य है, द्रव्य गुण आधार।
गुण को निर्गुण कहा, दूजा गुण ना भार॥५.४१.२०८॥

द्रव्य के आश्रय में रहने वाले गुण स्वयं निर्गुण होते है।

Qualities are based on substances but they themselves don't have any other quality.

तद् भाव परिणाम:॥४२॥

द्रव्य और गुण भिन्न नहीं, द्रव्य के परिणाम।
निज स्वभाव परिणमन, द्रव्य गुण की काम॥५.४२.२०९॥

द्रव्य या गुणों का होना अर्थात् प्रतिसमय बदलते रहना परिणाम है।

The continuous change in substance (dravya) or it's qualities (Guna) is present condition (paryay or parinaam).

Chapter 6 - Influx of Karma - आस्रव

कायवाङ् मनः कर्म योगः॥१॥

क्रिया द्वारा कर्ता को, प्राप्त इष्ट सुहाय।
तन मन वचन की क्रिया, योग यही कहलाय॥६.१.२१०॥

शरीर, वचन और मन की क्रिया को योग कहते है।

The activity of the body, speech and mind is called union (Yog).

स आस्रव:॥२॥

मन वचन और काय का, जब होता संयोग।
कर्म ग्रहण चलता रहे, आस्रव ही है योग॥६.२.२११॥

वह योग ही आस्रव है।

The yog is influx of karma.

शुभः पुणयस्याशुभः पापस्य ॥३॥

अशुभयोग से आस्रव हो, पापकर्म को मान।
शुभयोग भी आस्रव है, पुण्य कर्म का जान॥६.३.२१२॥

शुभयोग से पुण्य कर्म का और अशुभयोग से पाप कर्म का आस्रव होता है।

Virtuous activity is cause of merit (punya) and evil activity is the cause of demerit (pap)

सकषायाकषाययोः साम्परायिकोर्यापथयोः ॥४॥

साम्परायिक आस्रव हो, जीव पीड़ित कषाय।
ईर्यापथ में आस्रव हो, जीव नहीं सकषाय ॥६.४.२१३॥

कषायसहित जीवों के साम्परायिक आस्रव होता है और कषाय रहित जीवों के ईर्यापथ आस्रव होता है।

There are two kinds of influx. Namely that of persons with passion which is cause of transmigration (samparayik). Another is of persons free from passions which shortens transmigration is called (Iryapath).

इन्द्रियकषायव्रतक्रिया: पञ्चचतु:पञ्चपञ्चविशंति संख्या पूर्वस्य भेदा: ॥५॥

चार कषाय पाँच इन्द्रियाँ, पच्चीस क्रिया जान।
सांपरायिक आस्रव है, पाँच अव्रत पहचान॥

इन्द्रियाँ पाँच, कषाय चार, अव्रत पाँच और पच्चीस क्रियायें ये सब सांपरायिक आस्रव के भेद है।

The subdivision of former (samparayik) are as follow.

1. **Senses (Indriya) five**
2. **Passions (Kasay) four**
3. **Non observance of vows (avrat) five**
4. **Activities (kriya) twenty five.**

तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः॥६॥

भाव मंद या तीव्र हो, ज्ञात अज्ञात भाव।
अधिकरण व वीर्य भी, भेद आस्रव भाव॥६.६.२१५॥

तीव्र भाव, मंद भाव, ज्ञात भाव, अज्ञात भाव, अधिकरण और वीर्य इनकी विशेषता से आस्रव भाव में भेद पड़ जाता है।

Influx of karma is differentiated on the basis of intensity of emotions (bhav), fullness of emotions, knowledge or ignorance of thoughts, basis (adhikaran) or potency.

अधिकरणं जीवाजीवा:॥७॥

आस्रव के आधार दो, अधिकरण प्रकार।
जीवाधिकरण जीव से, अजीव करो विचार॥६.७.२१६॥

आस्रव के आधार जीव और अजीव है। इस प्रकार अधिकरण दो प्रकार का है। जीवाधिकरण और अजीवाधिकरण।

Basis of influx of karma is of two types. Living being and non-living things.

आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः॥८॥

आरम्भ संरम्भ, समारम्भ, जीवाधिकरण जान।
कृत, कारित, अनुमोदना, योग व कषाय मान॥६.८.२१७॥

जीवाधिकरण संरम्भ, समारम्भ, आरम्भ ये तीन, मन, वचन और काय ये तीन योग, कृत, कारित और अनुमोदना ये तीन और क्रोध, मान, माया, लोभ ये चार कषायें और इनको गुणा (३*३*३*४) करने से १०८ प्रकार का है।

The basis influx of karma through living beings is of 108 types is as follow: planning, organising and beginning (3), mind, speech and body (yog) (3), doing, getting done one approving (3), passions - anger, pride, illusion and greed (4). Multiplication of 3x3x3x4 results to 108.

निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम्॥९॥

आस्रव अजीवाधिकरण, निर्वर्तना दो विचार।
दो प्रकार संयोग के, निसर्ग तीन प्रकार॥६.९.२१८॥

अजीवाधिकरण आस्रव दो प्रकार की निर्वर्तना (रचना), चार प्रकार के निक्षेप (स्थापना), दो प्रकार के संयोग और तीन प्रकार के निसर्ग (प्रवृति) ऐसे कुल ११ भेद रुप है।

Creation of 2 types, placing of 4 types, combining of 2 types and activity of 3 types is basis of influx of karma through non living things.

तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः॥१०॥

आस्रव ज्ञान दर्शनावरण, प्रदोष निन्हव बात।
मात्सर्य अन्तराय भी, आसादन उपघात॥६.१०.२१९॥

ज्ञानावरण और दर्शनावरण के आस्रव कारण है, प्रदोष (निन्दा), निन्हव (छुपाना), मात्सर्य (घमण्ड), अन्तराय (बाधा), आसादन (निषेध) और उपघात।

The reasons for obscure of knowledge and faith are as follow. Spite or condemnation, concealment, non-imparting, causing impediment, disregard and derogation.

दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभय-
स्थानान्यसद्वेद्यस्य॥११॥

शोक, ताप, आक्रन्दन दुःख, वध परिवेदन जान।
स्व, पर या दोनों करे, दुःख वेदनीय मान॥६.११.२२०॥

दुःख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वध और परिवेदन- इन्हें स्वयं को, पर को और दोनों को करने से असातावेदनीय कर्म का आस्रव होता है।

Suffering, sorrow, agony, moaning, killing and lamentation in self or others or both lead to the influx of karmas pertaining to unpleasant feelings.

भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य॥१२॥

जीवों पर दया करना और व्रतियों को दान देना, राग सहित संयम पालना, एकदेश संयम पालना, क्षमाभाव और निर्लोभ भाव रखना- इन सबसे सातावेदनीय कर्म का आस्रव होता है।

जीव व्रती पर अनुकम्पा, सरागसंयम योग।
क्षमाभाव निर्लोभ रहे, सुखवेदन संयोग॥६.१२.२२१॥

Compassion, devout, charity, asceticism with attachment, involuntary dissociation of karmas, contemplation, equanimity, freedom from greed leads to the influx of karmas that cause pleasant feelings.

केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य॥१३॥

केवली, शास्त्र, संघ, धर्म, देव का अवर्णवाद।
आस्रव दर्शन मोह रहे, होय नहीं अपवाद॥६.१३.२२२॥

केवली, शास्त्र, संघ, धर्म और देवों का अवर्णवाद करने से दर्शन मोह का आस्रव होता है।

Disrespecting omniscient, scriptures,sangha, true religion and celestial beings leads to influx of faith deluding karmas.

कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य॥१४॥

कषाय का जब हो उदय, तीव्र हो परिणाम।
चारित्रमोहनीय कर्म का, आस्रव करता काम॥६.१४.२२३॥

कषाय के उदय से परिणामों में तीव्र कलुषित होने से चारित्रमोहनीय कर्म का आस्रव होता है।

Intense feelings induced by the rise of the passions cause the influx of karma called conduct deluding karmas.

बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः॥१५॥

आरम्भिक हो बहुलता, परिग्रह का भंडार।
आसक्ति से आस्रव हो, नरक आयु का भार॥६.१५.२२४॥

बहुत आरम्भ और बहुत परिग्रह करने से नरकायु का आस्रव होता है।

Attachment to too many activities and possessions leads to life in the infernal regions.

माया तैर्यग्योनस्य॥१६॥

सीधे जो ना रह सके, तिर्यंच करो विचार।
आयु जो हो बांधनी, आस्रव मायाचार॥६.१६.२२५॥

मायाचार से तिर्यंच आयु का आस्रव होता है।

Deceitfulness results into the influx of life karma which leads to animal and vegetable world.

अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य॥१७॥

मनुज गति की चाह रहे, मोक्ष का है द्वार।
अल्प आरम्भों परिग्रह, मानव आयु विचार॥६.१७.२२६॥

अल्प आरम्भ करने और अल्प परिग्रह संग्रह से मनुष्य आयु का आस्रव होता है।

Attachment to activities and possessions cause in flux of karmas which leads to human life.

स्वभावमार्दवं च॥१८॥

और कारण मनुष्य का, कोमलता स्वभाव।
देवगति भी संभव है, कोमल जिसके भाव॥६.१८.२२७॥

और स्वभाव की कोमलता भी मनुष्य के साथ देव आयु के आस्रव का कारण है।

Mildness in nature leads to human life as well celestial beings (dev).

निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥

सात शील जिसके नहीं, पाँच व्रत अभाव।
चारों गति का बंध हो, छेद पड़ी है नाव॥६.१९.२२८॥

सात शील और अहिंसादि पाँच व्रतों का अभाव सभी आयुओं के आस्रव का कारण है।

Non observance of moral and main vows causes the influx of life karmas which leads to all the four kinds of lives (gati).

सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जरा
बालतपांसिदैवस्य॥२०॥

सराग या संयमासंयम, अकामनिर्जरा जान।बालतप का आस्रव, देव आयु सम्मान॥६.२०.२२९॥

सरागसंयम, संयमासंयम, अकामनिर्जरा और बालतप भी देवायु के आस्रव के कारण है।

Restraint with attachment, restraint cum non-restraint, involuntary dissociation of karmas and austerities accompanied by perverted faith causes the influx of karmas leading to celestial birth.

सम्यक्त्वं च॥२१॥

देव आयु आस्रव हो, श्रद्धा सम्यक सार।
देव वैमानिक संभव, सम्यक् हो संसार॥६.२१.२३०॥

सम्यक्त्व को भी देव आयु के आस्रव का कारण कहा है। (वैमानिक देवों की)

Right belief is also the cause of influx of karma leads to celestial birth.

योगवक्रताविसंवादनं चाशुभस्य नाम्न:॥२२॥

मन वचन और काय से, कुटिल जब व्यवहार।
वाद विवाद की प्रवृत्ति, अशुभ नाम की मार॥६.२२.२३१॥

योग (मन, वचन व काय) की कुटिलता और लड़ने झगड़ने की प्रवृत्ति से अशुभ नामकर्म का आस्रव होता है।

Crooked activities and deception causes the influx of inauspicious physique making (Naam) karma.

तद्विपरीतं शुभस्य॥२३॥

मन वचन और काय से, सरल जब व्यवहार।
वाद विवाद करे नहीं, शुभनाम कर्म विचार॥ ६.२३.२३२॥

अशुभ नाम कर्म के विपरीत योग की सरलता व विसंवाद नहीं होना, शुभ नाम कर्म के आस्रव का कारण है।

The opposites of these such as straightforward activity and honesty cause the influx of auspicious physique making karma.

दर्शनविशुद्धिविर्नयसंपन्नता शीलव्रतेष्यनतिचारो ऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिवैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचन भक्तिरावश्यकापरिहाणिमार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य॥२४॥

तीर्थंकर नाम कर्म का, सोलहकरण स्वभाव।
दर्शनशुद्धि, विनयसहित, शीलव्रत का भाव॥
ज्ञानोपयोग निरंतरता, संवेग, शक्तित:त्याग।शक्तित: तप, समाधि रहे, वैयावृत्य की आग॥भक्ति अरिहंत, आचार्य की, श्रुत, प्रवचन ज्ञान।
आवश्यक व प्रभावना, प्रवचनवत्सलत्व जान॥६.२४.२३३॥

दर्शनविशुद्धि, विनयसंपन्नता, निरतिचार शीलव्रत, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तित:त्याग, शक्तित: तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हदभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचनवत्सलत्व ये सोलह भावनायें तीर्थंकर नामकर्म के आस्रव के कारण है।

The influx of tirthankar name karma is caused by following 16 observances.

1. Purity of right faith
2. Reverence
3. Observance of vows without any transgressions
4. Ceaseless pursuit of knowledge
5. Perpetual fear of cycle of birth and rebirth
6. Renunciation as possible
7. Practising austerities as per capacity
8. Thoughtlessness of saint
9. Selfless service to ascetics
10. Devotion to omniscient lords
11. Devotion to head of congregation
12. Devotion to perceptors
13. Devotion to scriptures
14. Practising essential duties
15. Propagation of teaching of omniscients
16. Selfless affection to sermons

परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचार्गोत्रस्य॥२५॥

परनिंदा स्व प्रशंसा, 'पर' गुण का न बखान।
गुण कहे जो है नहीं, नीच गोत्र हो जान॥६.२५.२३४॥

दूसरों की निन्दा, अपनी प्रशंसा, दूसरों के गुणों को ढंकना और अपने में जो गुण नहीं है उसको प्रकट करना ऐसे भावों से नीच गोत्र का आस्रव होता है।

Criticising others and praising self, concealing good qualities of others and highlighting good qualities which are absent in self, causes the influx of karmas which lead to lower status.

तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य॥२६॥

स्व निन्दा 'पर' प्रशंसा, 'पर' गुण करे बखान।
अवगुण को देखे नहीं, उच्च गोत्र का मान॥६.२६.२३५॥

इसके विपरीत कारणों से अर्थात् दूसरों की प्रशंसा, अपनी निन्दा, दूसरों के गुणों को प्रकट करना अवगुणों को ढाँकना, स्वयं के गुणों को प्रकट न करना व दोषों को उजागर करना , गुणीजनों के सामने विनम्र रहना, गुणों के होने पर भी अभिमान न करना ये सब उच्च गोत्र के आस्रव के कारण है।

The opposite of those mentioned in previous sutra leads to higher status.

विध्नकरणमन्तरायस्य॥२७॥

विध्न करे जो दान में, लाभ भोग उपभोग।
बस में भी बाधा करे, अन्तराय का योग॥६.२७.२३६॥

दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य में विध्न डालने से अन्तराय कर्म का आस्रव होता है।

Laying the obstacles in charity, profitability, consumption, utilisation and potency leads to influx of obstructing karmas.

Chapter 7 - Five Vows - पाँच व्रत

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्॥१॥

पाप से जो रहित करे, व्रत है उसका नाम।
चोरी हिंसा झूठ चोरी कहे, कुशील, परिग्रह काम॥७.१.२३७॥

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह इन पाँच पापो से रहित होना व्रत है।

Be free from five sins such as violence, lies, stealing, bad character and possessions is observing vows.

देशसर्वतोऽणुमहती॥२॥

पाँच पाप के भेद दो, सकल, आंशिक त्याग।
आंशिक को अणुव्रत कहा, सकल महाव्रत त्याग॥७.२.२३८॥

उक्त पाँचों पापों के एक देश त्याग को अणुव्रत कहते हैं और पूरी तरह त्याग को महाव्रत कहते है।

These vows is of two types. Partial and complete.

तत्स्थैर्यार्थं भावना: पञ्च पञ्च॥३॥

स्थिर व्रत को कर सके, प्रति भावना पाँच॥
अहिंसा सत अचौर्य हो, शील अपरिग्रह आँच॥७.३.२३९॥

उक्त व्रतों की स्थिरता के लिए प्रत्येक व्रत की पाँच पाँच भावनायें हैं।

For the stability of these vows there are five observances in each.

वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्ष्पणसमित्यालोकित पानभोजनानि पञ्च॥४॥

गुप्ति मन और वचन की, निक्षेपण आदान।
अहिंसा व्रत ईर्या समिति, सतर्क भोजन पान॥७.४.२४०॥

वचन गुप्ति, मनोगुप्ति, ईर्यासमिति, आदाननिक्षेपणसमिति और आलोकितपानभोजन ये अहिंसा व्रत की पाँच भावनायें है।

To observer non-violence:

1. **Control on speech**
2. **Control on thoughts**
3. **Cautious in movements**
4. **Cautious in taking and placing things**
5. **Cautious in eating and drinking**

क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याखानान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च ॥५॥

क्रोध लोभ भय हास्य का, करता है जो त्याग।
सत्य व्रत की भावना, वचन शास्त्र अनुराग॥७.५.२४१॥

क्रोध लोभ भय और हास्य का त्याग और शास्त्र के अनुसार बोलना ये सत्य व्रत की पाँच भावनायें है।

To observe truthfulness:

1. **Renunciation of anger**
2. **Renunciation of greed**
3. **Renunciation of fear**
4. **Renunciation of humour**
5. **Speaking as per scriptures**

शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धि
सधर्माविसंवादाः पञ्च॥१६॥

रह सुनसान निर्जन जगह, रोक टोक ना जान।
भिक्षाशुद्धि, विवाद नहीं, अचौर्य भाव सम्मान॥७.६.२४२॥

जहाँ कोई न रहता हो (शून्यागारावास), किसी ने जगह छोड़ती हो वहाँ रहना (विमोचितावास), दूसरों को ठहरने से नहीं रोकना (परोपरोधाकरण), भिक्षा की शुद्धि और सधर्मियो से विवाद न करना ये पाँच अचौर्य की भावनायें हैं।

Living in either lonely place or deserted by someone, causing no hindrance to other, accepting clean and pure food, not having argumentative fight with colleagues in dharma are five non-staling vows.

स्त्रीरागकथाश्रवण
तन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरस
स्वशरूरसंस्कारत्यागा: पञ्च॥७॥

अंग दर्शन ना कथा, नहीं याद संभोग।
इष्ट रस नहीं गर्व स्व, ब्रह्मचर्य का योग॥७.७.२४३॥

स्त्रियों में राग पैदा करने वाली कथा सुनने का त्याग, स्त्रियों के मनोहर अंगों को देखने का त्याग, पूर्व भोगों के स्मरण का त्याग, गरिष्ठ और इष्ट रस का त्याग तथा अपने शरीर के संस्कार का त्याग ये पाँच ब्रह्मचर्य व्रत की भावनायें है।

Non-listening of stories which excites attachment for women, looking at beautiful part of bodies of women, remembering earlier sexual pleasures, eating food which arouse sexual desires and adornment of own body are five celibacy vows.

मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च॥८॥

राग द्वेष का भाव नहीं, बुरा न अच्छा भान।
इन्द्रिय विषय दूर रहे, अपरिग्रहव्रत जान॥७.८.२४४॥

मनोज्ञ और अमनोज्ञ इन्द्रियों के विषयों में क्रम से राग और द्वेष का त्याग करना ये अपरिग्रहव्रत की पाँच भावनायें है।

Giving up attachment to likeable objects or aversion for non-likeable objects to five senses constitutes five non-possession vow.

हिंसादिष्विहामुत्रापाया वद्यदर्शनम्॥९॥

चोरी हिंसा झूठ कहे, कुशील परिग्रह काम।
निन्दा और विनाश हो, भाव त्याग हो नाम॥७.९.२४५॥

हिंसादि पाँच पाप इस लोक में और परलोक में विनाशकारी और निन्दनीय है। इसके त्याग की भावना भानी चाहिए।

The consequence of violence etc sins brings destructible results in this world or next world.

दुःखमेव वा॥१०॥

चोरी हिंसा झूठ कहे, कुशील परिग्रह काम।
जीवनभर दुख ही रहे, भाव त्याग हो नाम॥७.१०.२४६॥

अथवा ये हिंसादि पाप दुःखरुप ही है। ऐसी भावना भाना चाहिए।

And brings suffering only.

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च
सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनेयेषु॥११॥

मैत्री हो सब जीव से, गुणी हर्ष का भाव।
करुणा करु जीव दुखी, अविनयी तटस्थ
भाव॥७.११.२४७॥

समस्त प्राणियों से मित्रता की भावना, गुणवानों के प्रति प्रमोदभाव, दुखी जीवों के प्रति करूणाभाव और अविनयी उद्दण्ड लोगों के प्रति माध्यस्थ भाव रखना चाहिए।

Keep Friendship feeling for all living being, feeling of joy for all virtuous people, compassion for suffering beings and neutral feeling for impolite people.

जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम्॥१२॥

संसार चक्र का भय रहे, शरीर दुखी स्वभाव।
वैराग्य की जो चाह हो, मन में हर पल भाव॥७.१२.२४८॥

संवेग और वैराग्य के लिए जगत और शरीर के स्वभाव का विचार करते रहना चाहिए।

For detachment continuously keep in mind the fear of cycle of birth and death and suffering of this body.

प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा॥१३॥

जीव हिंसा होती क्या, तू ले अब यह जान।
मन वचन और काय से, प्रमादवश हर प्राण॥७.१३.२४९॥

प्रमाद द्वार मन वचन व काया से किसी के प्राणों को हर लेना हिंसा है।

Taking life of someone with carelessness of thoughts, words and actions is called violence (hinsa).

असदभिधानमनृतम्॥१४॥

क्या असत् है बोलना, तू ले अब यह जान।
योग और प्रमाद से, करता झूठ बखान॥ ७.१४.२५०॥

प्रमाद द्वार मन वचन व काया से असत्य बोलना झूठ है।

Speaking lie with carelessness of thoughts, words and actions is called falsehood.

अदत्तादानं स्तेयम्॥१५॥

चोर कला किसको कहे, तू ले अब यह जान।
योग और प्रमाद से, ग्रहण वस्तु अंजान॥७.१५.२५१॥

प्रमाद द्वार मन वचन व काया से बिना दी हुई वस्तु को ग्रहण करना चोरी है।

Taking anything with carelessness of thoughts, words and actions is called stealing.

मैथुनमब्रह्म॥१६॥

ब्रह्मचर्य का अर्थ क्या, तू ले अब यह जान।
योग और प्रमाद से, मैथुन अब्रह्म मान॥७.१६.२५२॥

प्रमाद द्वार मन वचन व काया से मैथुन सेवन करना कुशील (अब्रह्म) है।

Sexual indulgence with carelessness of thoughts, words and actions constitutes absence of chastity.

मूर्च्छा परिग्रहः॥१७॥

परिग्रह का है अर्थ क्या, तू ले अब यह जान।
ममता का हो भाव जहाँ, परिग्रह की पहचान॥७.१७.२५३॥

प्रमाद द्वार मन वचन व काया से ममत्व परिणाम होना परिग्रह है।

Attachment to anything with carelessness of thoughts, words and actions is called possessiveness (parigrahi).

नि:शल्यो व्रती॥१८॥

काँटा है मिथ्यात्व भी, माया और निदान।
जीव नहीं वो कर सके, व्रत आदि का पान॥७.१८.२५४॥

जो शल्य रहित हो उसे व्रती कहते है। शल्य तीन कहे गये है। मिथ्यात्व, माया और निदान।

The votary is free from stings. There are 3 stings. Wrong belief, deceiving, anxiety for fulfilling desires (nidaan).

अगार्यनगारश्च॥१९॥

गृहस्थ अगारी जानते, संत अनगारी जान।
व्रती के प्रकार दो, श्रावक साधु मान॥७.१९.२५५॥

गृहस्थ (अगारी) और संत (अनगारी) दो प्रकार के व्रती होते है।

Votaries are of two types. House holder (Shravak). House less ascetic (muni).

अणुव्रतोऽगारी॥२०॥

अणुव्रत धारण करे, श्रावक वह कहलाय।
व्रतों की न कठोरता, गृहस्थ पालन भाय॥७.२०.२५६॥

जो गृहस्थ अणुव्रतों का पालन करता है वो अगारी है।

One who observes partial vows is called a shravak (house holder).

दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च॥२१॥

दिग देश अनर्थदण्ड विरति, सामायिक उपवास।
रोक भोगोपभोग की, अतिथि आदर ख़ास॥७.२१.२५७॥

दिग्विरति, देशविरति, अनर्थदण्डविरति, सामायिक व्रत, प्रोषधोपवासव्रत, भोगपरिभोगपरिमाणाव्रत और अतिथिसंविभागव्रत इन सात व्रतों सहित गृहस्थ अणुव्रती होता है।

Shravak follows following 7 additional vows to be anuvarti (minor vows).

1. **Abstaining from activity with regard to direction**
2. **Abstaining from activity with regard to area**
3. **Abstaining from activity with regard to purposeless activity**
4. **Samayik (periodical concentration)**
5. **Fasting at regular intervals**
6. **Limiting consumption and use of reconsumable things**
7. **Feeding ascetics and guests**

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥

मरण समाधि चाह रहे, अंत समय जब आय।
जोश भरी सल्लेखना, मोक्ष मार्ग को पाय॥७.२२.२५८॥

मरणकाल आने पर समाधिमरण व्रत का प्रीतिपूर्वक सेवन करना चाहिए।

The householder seeks with pleasure voluntary death (sallekhana) at the end of his life.

शंकाकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवा:
सम्यग्दृष्टेरतीचारा:॥२३॥

शंका कांक्षा घृणा रहे, दर्शन अन्य विचार।
अन्य दृष्टि स्तवन रहे, सम्यग्दृष्टि अतिचार॥७.२३.२५९॥

शंका, कांक्षा, घृणा, अन्यदृष्टि प्रशंसा और अन्यदृष्टि का स्तवन ये पाँच सम्यग्दृष्टि जीव के अतिचार है।

Right believer knows about five violations and avoid them:

1. **Doubt in Jinvaani**
2. **Desire for worldly enjoyments**
3. **Feeling of disgust**
4. **Admiration of wrong faith**
5. **Worshiping wrong faith**

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्॥२४॥

उल्लंघन हो जब नियम का, कहलाता अतिचार।
व्रत शील प्रत्येक का, पाँच पाँच अतिचार॥७.२४.२६०॥

व्रत और शीलों में भी क्रम से प्रत्येक में पाँच पाँच अतिचार (उल्लंघन) है।

Vows and supplementary vows have five violations each.

बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः॥२५॥

बंधन वध या छेदन हो, अधिक डाल दे भार।
अन्न जल बाधा करना, अहिंसा व्रत अतिचार॥७.२५.२६१॥

पाँच अहिंसाणुव्रत के अतिचार निम्न है।

१। बान्धना

२। वध करना या पीटना

३। छेदन भेदन करना

४। अधिक भार लादना

५। अन्न पान में बाधा डालना

Non violation vow have following five violations:

1. **Binding**
2. **Beating or killing**
3. **Mutilating limbs**
4. **Overloading**
5. **Withholding food and drink**

मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदा:॥२६॥

अफवाहें मिथ्या वचन, त्रुटिलेखन अतिचार।
नहीं धरोहर हड़पना, भेद गुप्त ही सार॥७.२६.२६२॥

सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार:
१। मिथ्या उपदेश
२। रहोभ्याखान- किसी युगल को देख कर अन्यथा सोचना
३। त्रुटिपूर्ण लेखन करना
४। न्यासापहार- किसी की धरोहर को नहीं हड़पना
५। साकारमन्त्र भेद- किसी के गुप्त भेद को खोल देना

Five violations of truthfulness vow:

1. Wrong teaching
2. Assumed wrong talk about couple
3. Forge writing
4. Misappropriation
5. Proclaiming others thoughts

स्तेनप्रयोगतदीहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानो
न्मानप्रतिरुपकव्यवहारा:॥२७॥

चोरी में सहयोग हो, चोरी वस्तु व्यापार।
कर चोरी व तोल गलत, मिलावटी अतिचार॥७.२७.२६३॥

अचौर्याणुव्रत के पाँच अतिचार है:
१। स्तेनप्रयोग - चोरी के लिये किसी को प्रेरणा देना
२। तदाहृतादान- चोरी की वस्तु लेना
३। विरुद्धराज्यातिक्रम- राज्य के विरुद्ध काम करना
४। हीनाधिक मानोन्मान- कम ज़्यादा तोलना
५। प्रतिरुपक व्यवहार- मिलावट करना

Five violations of non-stealing vow

1. **Prompting others to steal**
2. **Accepting stolen goods**
3. **Working anti government**
4. **Using wrong weights and measures**
5. **Adulteration**

परविवाहकरणत्वरिकापरगृहितापरिगृहितागमनानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशा:॥२८॥

पर विवाह रुचिकर लगे, पर नारी व्यभिचार।
अनंग क्रीडा काम तीव्रता, ब्रह्मचर्य अतिचार॥२८॥२६४॥

१। पर विवाह में रुचि लेना

२। पराई विवाहित स्त्री से व्यभिचार

३। पराई अविवाहित स्त्री से व्यभिचार

४। अनंगक्रीडा - काम सेवन के अंग को छोड़कर अन्य अंग से क्रीड़ा

५। मन में काम की तीव्रता के भाव न रखना

Five violations of celibacy vow:

1. Taking interest in wedding of others
2. Affair with other married person
3. Affair with other unmarried person
4. Using other than designated body parts for intercourse
5. Excessive sensual feelings

क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्य
प्रमाणातिक्रमा:॥२९॥

भूमि मकान रजत सुवर्ण, धन अन्न पशु दास ।
वस्त्र बर्तन हद भंग हो, परिग्रह व्रत का ह्रास॥७.२९.२६५॥

परिग्रहपरिमाण व्रत के पाँच अतिचार:

१। क्षेत्र - वास्तु

२। चांदी सोना

३। धन धान्य

४। दासी दास

५। वस्त्र बर्तन आदि।

Five violations of limits set for non-possession vow:

1. **Land and houses**
2. **Gold and silver**
3. **Money and crops**
4. **Men and women servants**
5. **Clothes and utensils**

ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि॥३०॥

ऊपर नीचे व तिर्यक, क्षेत्रिय सीमा पार।
विस्मृति परिमाण की, दिग्व्रत का अतिचार॥७.३०.२६६॥

दिग्विरति व्रत के पाँच अतिचार:
१। ऊपर की ओर अतिक्रम
२। नीचे की ओर अतिक्रम
३। तिरछी दिशा में अतिक्रम
४। क्षेत्र वृद्धि
५। स्मृत्यन्तराधान - भूल जाना

Violation of vow relating to direction:

1. **Exceeding upward limit**
2. **Exceeding downward limit**
3. **Exceeding horizontal limits**
4. **Enlarging the area limits**
5. **Forgetting limits set earlier**

आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपा: ॥३१॥

मंगाये व भेजे किसे, शब्द संकेत आचार।
वस्तु से आकर्षित करे, देशव्रत अतिचार ॥७.३१.२६७॥

देशव्रत के पाँच अतिचार:

१। आनयन - मर्यादा के बाहर की वस्तु मंगाना

२। प्रेष्यप्रयोग- मर्यादा के बाहर किसी को भेजकर काम कराना

३। शब्दानुपात- आवाज़ से मर्यादा के बाहर अपनी बात को समझाना

४। रूपानुपात- अपनी भावभंगिमा से मर्यादा के बाहर अपनी बात समझाना

५। पुद्गलक्षेपा:- मर्यादा के बाहर कंकर आदि फेंककर अपना काम कर लेना

5 violations of partial renunciation are as follow:

1. **Calling something from outside the limits set.**
2. **Commanding someone for outside the limits set**
3. **Using sound for outside the limits set**
4. **Using body language for outside limit set**
5. **Using some thing out of limits set.**

कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि॥३२॥

अशिष्ट वचन, असभ्य करम, अप्रयोजन विचार।
अप्रयोजन योग प्रवृत्ति, अनर्थ संग्रह अतिचार॥७.३२.२६८॥

अनर्थदण्डविरतिव्रत के अतिचारः

१। कन्दर्प - रागसहित अशिष्ट वचन कहना

२। कौत्कुच्य- शरीर की असभ्य चेष्टा करना

३। मौखर्य - बकवास करना

४। असमीक्ष्याधिकरण - बिना प्रयोजन मन वचन काय की प्रवृति करना।

५। उपभोगपरिभोगानर्थक्य -उपभोग परिभोग की वस्तुओं का अनर्थ संग्रह करना।

5 violation of purposeless acts:

1. **Purposeless talks**
2. **Purposeless actions**
3. **Senseless talks**
4. **Purposeless indulging by mind, words and actions.**
5. **Accumulation of purposeless things**

योगदु:प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि॥३३॥

मन वचन काय कुचेष्टा, अनुत्साह का भार।
भूल प्रवृत्ति ध्यान नहीं, सामायिक अतिचार॥७.३३.२६९॥

सामायिक व्रत के पाँच अतिचार

१। काय कुचेष्टा

२। वचन कुचेष्टा

३। मन कुचेष्टा

४। सामायिक में अनुत्साह

५। एकाग्रता के अभाव में सामायिक आदि पाठ को भूल जाना।

5 violations of samayik:

1. **Unnecessary use of body**
2. **Unnecessary use of words**
3. **Unnecessary us of thoughts**
4. **Lack of enthusiasm in samayik**
5. **Forgetting due to lack of concentration**

अप्रत्यवेक्षिताप्रामार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि॥३४॥

ना देखे शोधे बिना, उत्सर्ग व्यवहार।
भूल अनादर जो करे, प्रोषध का अतिचार॥७.३४.२७०॥

प्रोषधोपवास व्रत के पाँच अतिचार:

१। अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित उत्सर्ग - बिना देखे बिना शोधे मल मूत्र आदि का क्षेपण

२। अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित आदान- बिना देखे बिना शोधे वस्तु का ग्रहण

३। अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित संस्तरोपक्रमण- बिना देखे बिना शोधे ज़मीन पर कुछ रखना

४। अनादर- उत्साह रहित धर्म कार्य करना

५। स्मृत्यअनुपस्थान- आवश्यक धर्म कार्य को भूल जाना

5 violation during limited ascetic period (Proshadhopavas)

Without inspecting and cleaning discharge of urine etc.
Without inspecting and cleaning accepting any thing
Without inspecting and cleaning keeping something on floor or place.
Following partial asceticism without enthusiasm.
Forgetting necessary actions due to lack of concentration

सचित्तसम्बन्धसंमिश्राभिषवदु:पक्वाहारा:॥३५॥

सचित्त संबंध मिश्र रहे, अभिषव हो आहार।
अधपका आहार रहे, भोगव्रत अतिचार॥७.३५.२७१॥

भोगोपभोगपरिमाण व्रत के पाँच अतिचार:

१। सचित्त आहार

२। सचित्तसंबंध आहार

३। सचित्तसमिश्र आहार

४। अभिषव आहार

५। दुष्पक्व आहार

5 violations of vow relating to limiting consumption:

1. **Food with living organism**
2. **Food related to living organism**
3. **Food with mixed living organism**
4. **Toxic food**
5. **Not properly cooked food.**

सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः॥३६॥

सचित्त भोज न दे न ढके, ना पर वस्तु आहार।
अनादर व काल अनुचित, अतिथि व्रत अतिचार॥७.३६.२७२॥

अतिथिसंविभाग व्रत के ५ अतिचार:
१। सचित्त निक्षेप- सचित्त पत्र में भोजन देना
२। सचित्त अपिधान - सचित्त पत्र से ढके भोजन को देना
३। परव्यपदेश- दूसरे की वस्तु को देना
४। मात्सर्य- अनादरपूर्वक देना
५। कालातिक्रम - योग्य काल का उल्लंघन करके देना।

5 violation of sharing food with guest or monks:

1. **Serving on green leave**
2. **Covering by green leave**
3. **Serving others food**
4. **Giving with disrespect**
5. **Not giving in right time**

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि॥३७॥

जीवन मरण चाह रहे, स्वजनों से प्यार।
सुख स्मरणों निदान भी, सल्लेखन अतिचार॥७.३७.२७३॥

सल्लेखना व्रत के पाँच अतिचार:

१। जीने की इच्छा रखना

२। शीघ्र मरने की इच्छा करना

३। मित्रों में अनुराग करना

४। भोगे हुए सुखों का स्मरण करना

५। निदान- आगामी सुखों की वांछा करना

5 violations of voluntary death vow:

1. **Desire to live**
2. **Desire to die**
3. **Affection for friends and family**
4. **Remembering pleasures**
5. **Longing for pleasures**

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३८॥

भावना उपकार रहे, स्व वस्तु का त्याग।
करे दान महिमा बड़ी, वस्तु से नहीं राग॥७.३८.२७४॥

उपकार के हेतु से धनादि अपनी वस्तुओं का त्याग करना सो दान है।

Charity is the giving up of own item for benefit of others.

विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः॥३९॥

दान की हो विशेषता, बात जान लो चार।
विधि सह वस्तु विशेषता, विशेष दाता पात्र॥७.३९.२७५॥

विधि, द्रव्य, दाता और पात्र की विशेषता से दान में विशेषता होती है।

4 characteristic of making gift or charity worthwhile.

1. **Process of charity**
2. **The item itself**
3. **Giver**
4. **Suitability of receiver.**

Chapter 8 - Bondage of Karma - बंध

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः॥१॥

पाँच कारण कर्म बंध के, मिथ्यादर्शन भाव।
अविरति और प्रमाद भी, कषाय योग प्रभाव॥८.१.२७६॥

कर्म बंध के पाँच कारण है:

१। मिथ्यादर्शन

२। अविरति

३। प्रमाद

४। कषाय

५। योग

5 reason of bondage of karma

1. **Wrong belief**
2. **Absence of vows**
3. **Negligence**
4. **Passions**
5. **Yog - activities by mind, speech and body.**

सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः॥२॥

बंध क्या है कर्म का, ले अब यह तू जान।
कर्म पुद्गल ग्रहण करे, जब कषाय संग आन॥८.२.२७७॥

कषाय सहित होने से जीव कर्म के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है वह बंध है।

When soul (JEEV) is infected with passion (kasay), it attracts particles of karma (karman pudgal) which is called bondage (Bandh).

प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः॥३॥

है प्रकृति और स्थिति भी, बंध के चार प्रकार।
अनुभाग व प्रदेश भी, जैन दर्शन विचार॥८.३.२७८॥

वह बंध चार प्रकार का है:

१। प्रकृति बंध

२। स्थिति बंध

३। अनुभाग बंध

४। प्रदेश बंध

This bondage is of 4 types.

1. **Nature of bondage**
2. **Duration of bondage**
3. **Fruition of karma**
4. **Quantity of space points of karma**

आद्यो
ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तराया: ॥४॥

ज्ञानदर्शन आवरण, कर्म वेदनीय पाठ।
मोह आयु नामो कर्म, गोत्र अंतराय आठ॥८.४.२७९॥

प्रकृति बंध के ८ भेद है:

१। ज्ञानावरण
२। दर्शनावरण
३। वेदनीय
४। मोहनीय
५। आयु
६। नाम
७। गोत्र
८। अन्तराय

Bondage of karmic nature is of 8 types:

1. **Knowledge obscuring**
2. **Faith obscuring**
3. **Feeling incurring**
4. **Deluding**
5. **Life span**
6. **Physique building**
7. **Status determining**
8. **Obstructive**

पञ्चनवद्व्यष्टावंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद् द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम्॥५॥

पाँच, नौ, दो, है क्रम से, अट्ठाईस और चार।
ब्यालीस व दो भेद है, पाँच भेद विचार॥८.५.२८०॥

इन आठ कर्मों के क्रमश: पाँच, नौ, दो, अट्ठाईस, चार, ब्यालीस, दो और पाँच भेद होते है।

The subdivisions are five, nine, two, twenty eight, four, forty two, two and five respectively.

मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलानाम्॥६॥

पाँच आवरण ज्ञान के, मति श्रुत अवधि जान।
मन:पर्यय व केवल भी, भेद आवरण ज्ञान॥८.६.२८१॥

ज्ञानावरण के ५ भेद है:

१। मतिज्ञानावरण

२। श्रुतज्ञानावरण

३। अवधिज्ञानावरण

४। मन:पर्यय ज्ञानावरण

५। केवलज्ञानावरण

5 kinds of knowledge obscuring karma are as follow:

1. **Sensory knowledge cover**
2. **Scriptural knowledge cover**
3. **Clairvoyance knowledge cover**
4. **Telepathy knowledge cover**
5. **Omniscience knowledge cover**

चक्षुरचक्षुरवधिक्वलानां
निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च॥७॥

चक्षु अचक्षु केवल अवधि, निद्रा प्रचला भेद।
गहरी नींद या झपकी, चले नींद नव भेद॥८.७.२८२॥

दर्शनावरण कर्म के ९ भेद है:

१। चक्षु दर्शनावरण

२। अचक्षुदर्शनावरण

३। अवधिदर्शनावरण

४। केवलदर्शनावरण

५। निद्रा

६। निद्रानिद्रा

७। प्रचला

८। प्रचलाप्रचला

९। स्त्यानगृद्धि - नींद में कार्य करना

9 kinds of faith covering karma:

1. **Ocular covering faith**
2. **Non-ocular covering faith**
3. **Clairvoyant covering faith**
4. **Omniscience covering faith**

सदसद्वेद्ये॥८॥

वेदनीय साता रहे, असाता भी संसार।
वेदनीय के भेद दो, अंत समय तक भार॥८.८.२८३॥

वेदनीय कर्म के २ प्रकार है
१। सातावेदनीय
२। असातावेदनीय

2 kinds of feeling covering karma:

1. **Pleasant feelings**
2. **Unpleasant feelings**

दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडश भेदा:सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौहास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदाअनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकश: क्रोधमानमायालोभा:॥९॥

सम्यक्त्व मिथ्यात्व मिश्र भी, नोकषाय नौ जान।
चार कषाय व चौकड़ी, अट्ठाईस यह मान॥८.९.२८४॥

दर्शनमोहनीय के तीन भेद:

१। सम्यक्त्व मोहनीय

२। मिथ्यात्व मोहनीय

३। सम्यग्मिथ्यात्व मोहनीय

चारित्रमोहनीय के दो भेद:

१। अकषायवेदनीय और

२। कषायवेदनीय

अकषायवेदनीय के ९ भेद

१। हास्य

२। रति

३। अरति

४। शोक

५। भय

६। जुगुप्सा

७। स्त्रीवेद

८। पुरुषवेद

९। नपुंसकवेद

कषायवेदनीय के १६ भेद:

१। अनन्तानुबंधी (क्रोध, मान, माया, लोभ)

२। अप्रत्याखान (क्रोध, मान, माया, लोभ)

३। प्रत्याख्यान (क्रोध, मान, माया, लोभ)

४। संज्लवन (क्रोध, मान, माया, लोभ)

Faith Obscuring karma are of 3 types:

1. **Right belief**
2. **Wrong belief**
3. **Mixed belief**

Conduct deluding is of 2 types:

1. **Quasi passion feeling**
2. **Passion feeling**

Quasi passion feelings are of 9 kinds

1. **Laughter**
2. **Liking**
3. **Disliking**
4. **Sorrow**
5. **Fear**
6. **Disgust**
7. **FeMale sex passion**
8. **Male sex passion**
9. **Neuter sex passion**

नारककतैर्यग्योनमानुषदैवानि॥१०॥

नर्क तिर्यंच और मनुज, देव आयु पहचान।
चार भेद है आयुकर्म, कर्म बंध का ज्ञान॥८.१०.२८५॥

आयुकर्म के ४ भेद:
१। नर्क आयु
२। तिर्यंच आयु
३। मनुष्य आयु
४। देव आयु

Life karma are of 4 kinds:

1. **Internal beings**
2. **Plants and animals**
3. **Human beings**
4. **Celestial beings**

गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माणबंधनसंघातसंस्थान-
संहननस्पर्शरसगंधवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघात-
परघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतय:-
प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्ति-
स्थिरादेययश:कीर्तिसेतराणी तीर्थकरत्वं च॥११॥

गति जाति व शरीर मिले, नामकर्म पहचान।
अंगोपांग बंधन भी, संघात संस्थान॥
संहनन स्पर्श रस व गंध, वर्ण आनुपूर्व पात।
विहायोगति निर्माण भी, अगुरुलघु व उपघात॥
परघात व आतप मिले, उद्योत व उच्छ्वास।
तीर्थंकर की गति मिले, नामकर्म है खास॥
तन अलग साधारण या, त्रस स्थावर भेद।
सुभग-दुर्भग सुस्वर दुस्वर, शुभ अशुभ का भेद॥
तन बादर व सूक्ष्म मिले, पर्याप्त या ना पाय।
स्थिर आदेय यश मिले, या उल्टा मिल जाय॥८.११.२८६॥

नामकर्म के ४२ भेद है।

नाम कर्म की पिण्ड प्रकृति १४

गति ४

जाति ५

शरीर ५

अंगोपांग ३

बंधन ५

संघात ५

संस्थान ६

संहनन ६

स्पर्श ८

रस ५

गंध २

वर्ण ५

आनुपूर्वी ४

विहायोगति २

नाम कर्म की प्रत्येक प्रकृति ८

निर्माण

अगुरुलघु

उपघात

परघात

आतप

उद्योत

उच्छ्वास

तीर्थंकर

नामकर्म के १० जोड़े

प्रत्येक- साधारण

त्रस - स्थावर

सुभग - दुर्भग

सुस्वर - दुस्वर

शुभ - अशुभ

बादर - सूक्ष्म

पर्याप्त - अपर्याप्त

स्थिर - अस्थिर

आदेय- अनादेय

यश कीर्ति - अयश कीर्ति

The name Karma has 42 types divisions:
The state of existence, class, body, body parts, formation, binding, molecular inter fusion, structure, joints, touch, taste, smell, colour, migratory form after death, neither heavy nor light, self annihilation, annihilation by others, emitting warm light, emitting cool light, respiration, gait. 10 duals with opposites. Individual body and collective body, mobile and immobile, good tempered and bad tempered, melodious voice and unmelodious voice, attractiveness of form and unattractiveness, minute body and gross body, completion and incompletion, firmness and infirmness, lustrous and lustreless, glory and obscurity.

उच्चैर्नीचैश्च॥१२॥

गोत्र कर्म के भेद दो, उच्च नीच हो हाल।
कर्मो की महिमा बड़ी, जीव बंधे चिरकाल॥८.१२.२८७॥

गोत्र कर्म के दो भेद है। उच्च गोत्र व नीच गोत्र

Status determining karma have 2 divisions. High status and low status.

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम्॥१३॥

अंतराय पाँच भेद है, दान लाभ संग भोग।
उपभोग और वीर्य भी, अंतराय के रोग॥८.१३.२८८॥

अन्तराय कर्म के पाँच भेद है।

- दानान्तराय
- लाभान्तराय
- भोगान्तराय
- उपभोगान्तराय
- वीर्यान्तराय

The obstructive karma has five subdivisions.

1. **Obstructing in giving gift or charity**
2. **Obstructing in gain**
3. **Obstructing in consumables items**
4. **Obstructing in use of items**
5. **Obstructing in energy.**

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च
त्रिशंत्सागरोपमकोटीकोट्य: परा स्थिति:॥१४॥

ज्ञान दर्शन आवरण, वेदनीय अन्तराय।
तीस कोटि है अधिकतम, सागर में बस जाय॥८.१४.२८९॥

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय (शुरु के तीन) और अन्तराय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोटि कोटि सागरोपम है।

Knowledge covering, faith covering, feeling producing and obstructive karma has maximum duration of thirty sagaropama kotakoti.

सप्ततिर्मोहनीयस्य॥१५॥

सत्तर कोटाकोटि है, सागर अटके जान।
मोहनीय से अधिकतम, बंध मिले पहचान॥८.१५.२९०॥

मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोटाकोटि सागरोपम है।

Maximum Duration of deluding karma is seventy kotakoti sagaropam.

विशंतिर्नामगोत्रयो: ॥१६॥

कोटाकोटी बीस है , सागर अटके जान।
नाम गोत्र अरु कर्म का, बंधन है पहचान॥८.१६.२९१॥

नाम और गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोटाकोटि सागरोपम है।

Maximum duration of name and status karma is twenty kotakoti sagaropam.

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः॥१७॥

तैतीस कोटाकोटि है, सागर अटके जान।
आयु कर्म का अधिकतम, बंधन है पहचान॥८.१७.२९२॥

आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागरोपम है।

Maximum duration of life determining karma is thirty three sagaropam.

अपरा द्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य॥१८॥

कर्म वेदनीय की स्थिति, बारह मुहूर्त जान।
इससे कम बंधन नहीं, वेदन की पहचान॥८.१८.२९३॥

वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति बारह मुहूर्त है।

The minimum duration of feeling producing karma is twelve muhurta.

नामगोत्रयोरष्टो॥१९॥

नाम गोत्र अरु कर्म की, आठ मुहूर्त जान।
इससे कम बंधन नहीं, जघन्यता पहचान॥८.१९.२९४॥

नाम और गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त है।

The minimum duration of name and status determining karma is eight muhurta.

शेषणामन्तर्मुहूर्ता ॥२०॥

ज्ञान दर्शन मोह कर्म, अन्तर्मुहूर्त जान।
अन्तराय आयु कर्म भी, स्थिति जघन्य समान॥८.२०.२९५॥

बाक़ी के पाँच ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय,अन्तराय और आयु कर्मो की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है।

The minimum duration of knowledge obscuring, faith obscuring, deluding, obscuring and age karma is upto one muhurta.

विपाकोऽनुभव:॥२१॥

विविध यहाँ पे कर्म फल, कहलाते हैं पाक।
निर्जरा होती रहती, कर्मो की हो फाँक॥८.२१.२९६॥

विविध प्रकार का जो पाक (फल) है सो अनुभव है।

Fruition is the ripening or maturing of karmas.

स यथानाम ॥२२॥

कर्मो की जब बात करे, बंध बंधे अनुभाग।
कर्म नाम अनुसार ही, बंटते अलग विभाग॥८.२२.२९७॥

यह अनुभाग बंध कर्मो के नाम के अनुसार ही होता है।

The nature of fruition is according to the names of the karmas.

ततश्च निर्जरा॥२३॥

उदित कर्म होते जभी, हो निर्जरा शुरुआत।
होती आत्मा से अलग, जिन आगम की बात॥८.२३.२९८॥

उदय में आने के बाद कर्म आत्मा से पृथक् हो जाते है।

After fruition, the karma fall off.

नाम प्रत्यया: सर्वतो
योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहसिथिता:
सर्वात्मप्रदेष्वनन्तानन्तप्रदेशा:॥२४॥

प्रदेश बंध को समझ ले, एकक्षेत्रअवगाह।
आत्मा कर्म मिले जुले, मिले योग से राह॥८.२४.२९९॥

ज्ञानावरणादि कर्म प्रकृतियों के कारण, सर्व तरफ़ से योग विशेष से सूक्ष्म एकक्षेत्रअवगाहरुप स्थित और सर्व आत्म प्रदेशों में जो कर्म पुद्गल के अनन्तानन्त प्रदेश है सो प्रदेश बंध है।

The minute karmic molecules of infinite times and infinite space points always pervade in a subtle form the entire space points of soul in every birth.

सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥

साता वेदनीय कर्म है, पुण्य प्रकृति जान।
शुभ आयु शुभ नाम भी, शुभ गोत्र पहचान॥८.२५.३००॥

साता वेदनीय, शुभ आयु, शुभ नाम और शुभ गोत्र ये पुण्य प्रकृतियाँ है।

The food variety of feeling producing karmas, auspicious life,auspicious name and auspicious status constitute merit (punya).

अतोऽन्यत्पापम्॥२६॥

पुण्य प्रकृतियाँ छोड़कर, बाक़ी सब है पाप।
बंधन में बंधना नहीं, बात समझलो आप॥८.२६.३०१॥

इन पुण्य प्रकृतियों से अन्य पाप प्रकृतियाँ है।

The remaining varies of karma constitutes demerit (paap).

Chapter 9 - Stoppage and Shedding of Karma - संवर और निर्जरा

आस्रवनिरोधः संवरः॥१॥

संवर को अब जानिये, कर्म बंध रुक जाय।
आस्रव का ही रोकना, संवर का फल पाय॥९.१.३०२॥

आस्रव का रोकना सो संवर है।

The obstruction of influx is stoppage of karma.

स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः॥२॥

गुप्ति, समिति, धर्म भी, अनुप्रेक्षा संवर जान।
परीषह जय, चारित्र भी, संवर की पहचान॥९.२.३०३॥

गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषह जय और चारित्र से संवर होता है।

Stoppage of karma can be achieved in six ways. Self control, carefulness, virtue, contemplation, endurance and conduct.

तपसा निर्जरा च॥३॥

तप से भी बंद रहे, बंधन का तूफ़ान।
हो संवर और निर्जरा, तप की ऐसी शान॥९.३.३०४॥

तप से संवर और निर्जरा होती है।

By penance stoppage and shedding of karma is possible.

सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः॥४॥

मन, वचन और काय की, योग सके तो रोक।
गुप्ति इसी का नाम है, संवर होता लोक॥९.४.३०५॥

मन, वचन और काय- इन तीन योगो की स्वेच्छाचारिता का अच्छी तरह से रोकना गुप्ति है।

Controlling activity of mind, words and activity is gupti.

ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितिः ॥५॥

ईर्या, भाषा एषणा, लेना रखना जान।
उत्सर्ग भी अच्छी तरह, करे समिति पहचान॥९.५.३०६॥

ईर्या, भाषा, एषणा, आदाननिक्षेप और उत्सर्ग अच्छी तरह से करना समिति है।

Regulate properly walking, speaking, eating, lifting and laying down and disposing waste is called samiti.

उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्म चर्याणि धर्मः॥६॥

क्षमा, मार्दव, आर्जव भी, संयम शौच सतवान।
तप, त्याग, आकिन्चन्य उत्तम, ब्रह्मचर्य धर्म पहचान॥९.६.३०७॥

उत्तमक्षमा, उत्तममार्दव, उत्तमआर्जव, उत्तमशौच, उत्तमसत्य, उत्तमसंयम, उत्तमतप, उत्तमत्याग, उत्तमआकिन्चन्य और उत्तमब्रह्मचर्य ये दस धर्म है।

10 supreme virtues (dharma) are as follow:

1. **Forgiveness**
2. **Egoless**
3. **Simplicity**
4. **Purity**
5. **Truthful**
6. **Self restraint**
7. **Austerity**
8. **Renunciation**
9. **Non attachment**
10. **Celibacy**

अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोक
बोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षा: ॥७॥

अनित्य व अशरण भावना, एकत्व और संसार ।
अन्यत्व, अशुचि, आस्रव भी, संवर, निर्जरा धार॥
लोक, व बोधिदुर्लभ भी, धर्म हो बारम्बार।
चिन्तवन बारह भावना, अनुप्रेक्षा बेड़ापार॥९.७.३०८॥

अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ और धर्म ये बारह अनुप्रेषित हैं जिनका बार बार चिंतवन करना चाहिए।

One must reflect on following 12 again and again:

1. **Impermanence**
2. **Helpless**
3. **Transmigration**
4. **Loneliness**
5. **Distinctness**
6. **Impurity**
7. **Influx**
8. **Stoppage**
9. **Dissociation**
10. **The universe**
11. **Rarity of enlightenment**
12. **Truth proclaimed by religion**

मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्या: परीषहा:॥८॥

संवर पथ से च्युत नहीं, हो निर्जरा की चाह।
परीषह पर विजय करो, सहना ही है राह॥९.८.३०९॥

संवर के मार्ग से च्युत न हो और कर्मों की निर्जरा के लिए परीषहों को शान्तभाव से सहन करना चाहिए ।

The afflictions are to be endured to remain on path of stoppage and shedding of karmas.

क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानाऽदर्शनानि॥९॥

भूख, प्यास, ठण्डी गरम, दंशमशक ना जान।
नग्नता, अरति, स्त्री रहे, चर्या, बैठक ध्यान॥
शय्या, आक्रोश, वध भी, याचना न स्वीकार।
अलाभ, रोग, शूल, मल, चाह नहीं सत्कार॥
प्रज्ञा या अज्ञान हो, अदर्शन का हो भार।
बाईस परीषह जानिये, मुनि ना करे विचार॥९.९.३१०॥

भूख, प्यास, ठण्ड, गर्मी, दंशमशक, नाग्न्य, अरति, स्त्री, चर्या, निषद्या, शय्या, आक्रोश, वध, याचना, अलाभ, रोग, तृणस्पर्श, मल, सत्कार-पुरस्कार, प्रज्ञा, अज्ञान, और अदर्शन ये बाईस परीषह है।

Following 22 afflictions to be conquered:

- **Hunger**
- **Thirst**
- **Cold**
- **Heat**
- **Insect bites**
- **Nakedness**

- **Aversion**
- **Women**
- **Discomforts in walking**
- **Discomforts in sitting**
- **Discomforts in sleeping**
- **Scolding**
- **Injury**
- **Begging**
- **Lack of gain**
- **Illness**
- **Pricking**
- **Dirt**
- **Reverence and honour**
- **Ego of knowledge**
- **Ignorance**
- **Loss of faith**

सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थ वीतरागयोश्चतुर्द्द॥१०॥

परीषह चौदह जय हो, दस बारह गुणस्थान।
सूक्ष्म साम्पराय को, वीतराग भी जान॥९.१०.३११॥

सूक्ष्म साम्पराय नामक दशवें गुणस्थान में और छद्मस्थ वीतराग दशा में अर्थात् ग्यारहवें और बारहवें गुणस्थान में चौदह परीषह कहे है।

Fourteen afflictions may occur in 10th to 12th Gunsthana.

एकादश जिने॥११॥

जिनेन्द्र देव संभव है, ग्यारह परीषह जान।
अलाभ, प्रज्ञा, अज्ञान ना, तेरहवाँ गुणस्थान॥९.११.३१२॥

जिनेन्द्र भगवान के अर्थात् तेरहवें गुण स्थान में ११ परिषह संभव है। अलाभ, प्रज्ञा और अज्ञान नहीं होता।

Upto eleven afflictions can occur to the omniscient Jina in 13th Gunasthana.

बादरसाम्पराये सर्वे॥१२॥

स्थूल कषाय मुनिसंत के, सभी परीषह मान।
छठे से नौ स्थान तक, परीषह जय विधान॥९.१२.३१३॥

स्थूल कषाय अर्थात् छठे गुणस्थान से नौवें गुणस्थान तक मुनिराजों के सभी परीषह हो सकते है।

All the afflictions can arise in the case of the ascetic (from 6-9th gunasthana) with gross passions.

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने॥१३॥

कर्म अनुसार परीषह का, देखे आज प्रभाव।
प्रज्ञा और अज्ञान मिले, ज्ञानावरण सद्भाव॥९.१३.३१४॥

ज्ञानावरण के सद्भाव में प्रज्ञा और अज्ञान परीषह होते है।

Knowledge and ignorance is caused by knowledge covering karmas.

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ॥१४॥

अदर्शन का परीषह हो, दर्शन मोह सद्भाव।
अलाभ का परीषह हो, अन्तराय के भाव॥९.१४.३१५॥

दर्शन मोह के सद्भाव में अदर्शन और अन्तराय के सद्भाव में अलाभ परीषह होता है।

Lack of faith is caused by faith deluding karma and lack of gain is caused by obstructive karmas.

चारित्रमोहे
नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्कारा:॥१५॥

नग्न, अरति, स्त्री, निषद्या, चारित्र मोह सद्भाव।
षाचना आक्रोश, रहे, पुरस्कार का भाव॥९.१५.३१६॥

चारित्र मोह के सद्भाव में नाग्न्य, अरति, स्त्री, निषद्या, आक्रोश, याचना और सत्कार- पुरस्कार परीषह होते है।

Conduct deluding karma causes following afflictions:

1. **Nakedness**
2. **Absence of pleasure**
3. **Woman**
4. **Sitting posture**
5. **Reproach**
6. **Begging**
7. **Reverence and honour**

वेदनीय शेषा: ॥१६॥

ग्यारह परीषह बचे, वेदनीय सद्भाव।
जीवन भर बन कर रहे, परीषह का स्वभाव॥९.१६.३१७॥

शेष सभी परीषह वेदनीय कर्म के सद्भाव में होते हैं।

The other afflictions are caused by feeling karmas.

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः॥१७॥

एक से उन्नीस तक हो, परीषहो का साथ।
चर्या शय्या या निषद्या, सर्दी या गर्मी हाथ॥९.१७.३१८॥

एक आत्मा के एकसाथ एक से लेकर उन्नीस तक परीषह हो सकते है।

One soul can have one to nineteen afflictions.

सामायिकच्छदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराययथा
ख्यातमिति चारित्रम्॥१८॥

सामायिक या पुनः नया, परिहापविशुद्धि धार।
मंदकषाय, आचरण सही, ये है चरित प्रकार॥९.१८.३१९॥

सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात ये पाँच चारित्र के प्रकार है।

Conducts are of five types:

1. **Samayik**
2. **Reinitiation**
3. **Purity of non injury**
4. **Minute passions**
5. **Perfect conduct**

अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यास
नकायक्लेशा बाह्यं तपः॥१९॥

अनशन और ऊणोदरी, वृत्तिपरिसंख्यान।
रसत्याग, एकान्त शयन, कायक्लेश तप जान॥९.१९

अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्तशय्यासन और कायक्लेश ये छह बहिरंग तप है।

The 6 external austerities are as follow:

1. **Fasting**
2. **Reduced diet**
3. **Special restrictions for bhiksha**
4. **Giving up stimulating and delicacies.**
5. **Lonely habitation**
6. **Mortification of body**

प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम्॥२०॥

प्रायश्चित सह विनय हो, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय।
व्युत्सर्ग और ध्यान भी, अंतरंग तप ध्याय॥९.२०.३२१॥

प्रयश्चित, विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान ये छह प्रकार के अंतरंग तप है।

The 6 internal austerities are as follow:

1. **Expiation**
2. **Reverence**
3. **Service**
4. **Study**
5. **Renunciation**
6. **Meditation**

नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदा यथाक्रमम् प्राग्ध्यानात्॥२१॥

नव चार दस पाँच दो, यथाक्रमिक है भेद।
ध्यान पहले पाँच तप, आगम का है वेद॥९.२१.३२२॥

ध्यान के पहले के पाँच तप के भेद:

- प्रायश्चित के नौ
- विनय के चार
- वैयावृत्त्य के दस
- स्वाध्याय के पाँच
- व्युत्सर्ग के दो भेद है।

Prior to meditation these are of nine, four, ten, five and two types respectively.

आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोप स्थापना:॥२२॥

प्रतिक्रमण आलोचना, तदुभय और विवेक।
व्युत्सर्ग, तप, छेद भी, प्रायश्चित हो नेक॥
परिहार उपस्थापना, प्रायश्चित नौ भेद।
संवर सह निर्जरा करो, मोक्षमार्ग का वेद॥९.२२.३२३॥

आलोचना, प्रतिक्रमण, तदुभय, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार और उपस्थापना ये प्रायश्चित तप के नौ भेद है।

Expiation Austerity is of 9 types:

1. **Confession**
2. **Repentance or pratikraman**
3. **Both above**
4. **Conscious**
5. **Abandoning**
6. **Penance**
7. **Degradation**
8. **Expulsion**
9. **Reinstate**

ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः॥२३॥

ज्ञानविनय दर्शनविनय, चरित्रविनय पहचान
जान ले उपचारविनय, तप विनय का ज्ञान॥९.२३.३२४॥

विनय तप के चार भेदः

- ज्ञानविनय
- दर्शनविनय
- चारित्रविनय
- उपचारविनय

Reverence is of 4 types:

- **knowledge**
- **Faith**
- **Conduct**
- **Formality**

आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम्॥२४॥

उपाध्याय आचार्य भी, तपस्वी, शैक्ष्य, ग्लान।
गण, कुल, संघ व साधु भी, मनोज्ञ सेवा जान॥९.२४.३२५॥

दस प्रकार के परिस्थितियों के अनुसार मुनियों की सेवा करना वैयावृत्त्य तप है।

- आचार्य
- उपाध्याय
- तपस्वी
- शैक्ष्य
- ग्लान
- गण
- कुल
- संघ
- साधु
- मनोज्ञ

Selfless service penance is to serve 10 types of sants:

- **Head**

- **Preceptor**
- **Ascetic**
- **Disciple**
- **Ailing ascetic**
- **Congregation of aged saints**
- **Congregation of common teacher**
- **Congregation of four orders**
- **Long standing ascetic**
- **Saint of high reputation**

वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशा: ॥२५॥

स्वाध्याय तप भेद है, पढ़न पृच्छना ज्ञान।
अनुप्रेक्षा आम्नाय भी, धर्मोपदेश संज्ञान॥९.२५.३२६॥

स्वाध्याय तप के पाँच भेद है।

- वाचना
- पृच्छना
- अनुप्रेक्षा
- आम्नाय
- धर्मोपदेश

Self study penance are of 5 types:

- **Reading**
- **Questioning**
- **Reflection**
- **Recitation**
- **Preaching**

बाह्याभ्यन्तरोपध्योः॥२६॥

व्युत्सर्ग तप भेद दो, बाह्य उपधिव्युत्सर्ग।
अंदर बाहर मोह नहीं, अभ्यंतर उपधिव्युत्सर्ग॥९.२६.३२७॥

व्युत्सर्ग तप के दो भेद है।

- बाह्य उपधिव्युत्सर्ग
- अभ्यंतर उपधिव्युत्सर्ग

Penance of abandoning is of 2 types. Internal attachments and external attachments.

उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो
ध्यानमान्तर्मुहूर्तात्॥२७॥

उत्तम संहनन चाहिये, अन्तरमुहूर्त ध्यान।
चिन्तन अन्य निरोध रहे, एकाग्रता ही ध्यान॥९.२७.३२८॥

उत्तम संहनन वाले के अन्तरमुहूर्त तक एक विषय पर एकाग्रतापूर्वक चिन्तन व बाक़ी का निरोध रहे सो ध्यान है।

A person with best physical structure can concentrate for meditation upto one muhurta.

आर्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि॥२८॥

चार भेद है ध्यान के, आर्त रौद्र ध्यान।
धर्म्य शुक्ल ध्यान भी, एकाग्र रहे तो जान॥९.२८.३२९॥

ध्यान के ४ भेद है।

- आर्त ध्यान
- रौद्र ध्यान
- धर्म्य ध्यान
- शुक्ल ध्यान

Meditation is of 4 types:

- **sorrowful**
- **Wrathful**
- **Virtuous**
- **Pure**

परे मोक्षहेतू॥२९॥

मोक्ष की हो कामना, अंत के दो ध्यान।
धर्म्य ध्यान हो सदा, शुक्ल ध्यान भी जान॥९.२९.२३०॥

अन्त के दो ध्यान मोक्ष कारण है।

The last two type of meditation are the cause of liberation.

आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार:॥३०॥

अनिष्ट का संयोग हो, हो वियोग की चाह।
आर्त ध्यान का भेद है, अनिष्ट संयोगज राह॥९.३०.३३१॥

अनिष्ट पदार्थ के संयोग होने से उसको दूर करने के लिए बारम्बार विचार करना 'अनिष्ट संयोगज' नाम का आर्त ध्यान है।

On attaching to undesirable object, thinking again and again for disassociation of the same is called "undesirable association" concentration.

विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥

इष्ट वस्तु वियोग रहे, वापस की हो चाह।
आर्त ध्यान का भेद है, इष्ट वियोगज राह॥९.३०.३३१॥

इष्ट पदार्थ का वियोग होने पर बार बार उसकी ध्यान करना 'इष्ट वियोगज' नाम का आर्त ध्यान है।

On disassociation with liked object focusing again and again on same is called "desirable disassociation' meditation.

वेदनायश्च॥३२॥

रोगजनित पीड़ा रहे, दूर करू हो चाह।
बारम्बार हो चिन्तवन, वेदनाजन्य गुनाह॥९.३२.३३३॥

रोगजनित पीड़ा होने पर उसे दूर करने के लिए बार बार चिन्तवन करना वेदनाजन्य आर्त ध्यान है।

Focusing again and again on suffering is called ‘pain inflicting sorrowful meditation”.

निदानं च॥३३॥

भविष्य की चिंता रहे, चित्त निरन्तर ध्यान।
आर्तध्यान निदानज है, जिनवाणी का ज्ञान॥९.३३.३३४॥

भविष्यकाल संबंधी विषयों की प्राप्ति में चित्त को तल्लीन कर देना निदानज आर्तध्यान है।

Concentration on future enjoyments is called ‘future desires sorrowful meditation”.

तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम्॥३४॥

अविरत देशविरत रहे, या प्रमत्तसंयत स्थान।
पहले से छठवें तलक, होता आर्तध्यान॥९.३४.३३५॥

वह आर्तध्यान अविरत- पहले चार गुण स्थान, देशविरत- पाँचवा गुणस्थान और प्रमत्तसंयत छट्ठे गुणस्थान में होता है।

Sorrowful meditation occurs in avirat mean upto 4th stage, desh Virat mean 5th stage and pramatt samyat mean 6th stage.

हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो
रौद्रमविरतदेशविरतयोः॥३५॥

हिंसा, असत्य, चोरी रहे, परिग्रह रौद्रध्यान।
अविरत देशविरत रहे, इसका है गुणस्थान॥९.३५.३३६॥

हिंसा, असत्य, चोरी और परिग्रह के भाव से उत्पन्न आन्न्द से हुआ ध्यान रौद्रध्यान है। अविरत और देशविरत गुणस्थानों में होता है।

Cruel concentration relating to violence, untruth, stealing and safeguarding possessions occurs in case upto 5th stage of layman.

आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम्॥३६॥

विचार चार प्रकार का, होता धर्म्य ध्यान।
आज्ञा और अपाय भी, विपाक व संस्थान॥९.३६.३३७॥

धर्म्य ध्यान में निम्न ४ बातों का चिन्तवन करना:

- आज्ञाविचय
- अपायविचय
- विपाकविचय
- संस्थानविचय

Virtuous concentration is of 4 types:

- **Concentrate as per scriptures**
- **Meditation on worldly troubles**
- **Analytical meditation on fruition**
- **Meditation on structure of universe**

शुक्ले चाद्ये पूर्वविद:॥३७॥

पृथक्त्ववितर्क एकत्ववितर्क, पूर्व शुक्ल द्वी ध्यान।
श्रुतकेवली संभव है, ज्ञानधारी पहचान॥९.३७.३३८॥

पहले दो प्रकार के शुक्ल ध्यान- पृथक्त्ववितर्क और एकत्ववितर्क, पूर्वज्ञानधारी श्रुतकेवली के होते है।

The first two types of pure meditation (multiple contemplation and unitary contemplation) are attained by the saints well versed in the purvas.

परे केवलिनः॥३८॥

शुक्ल ध्यान दो अन्त के, केवलि ही कर पाय।
सयोग व अयोग क्रम हो, शुक्ल ध्यान सुहाय॥९.३८.३३९॥

अन्त के दो शुक्लध्यान (सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति और व्युपरकक्रियानिवर्ति) क्रमशः सयोग केवली और अयोग केवली के होते है।

The last 2 meditation (infallible state of pure meditation and cessation of activity) arises in omniscients only.

पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रत्पातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि॥३९॥

पृथक्त्ववितर्क, एकत्ववितर्क, शुक्ल ध्यान है चार।
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति है, ध्यान उच्च विचार॥
व्युपरतक्रियानिवर्ति भी, शुक्ल ध्यान का भेद।
उच्च स्थान ही पा सके, जिनवाणी का वेद॥९.३९.३४०॥

शुक्ल ध्यान के चार भेद है:

- पृथक्त्ववितर्क
- एकत्ववितर्क
- सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति
- व्युपरतक्रियानिवर्ति

The four type of pure concentration are:

- **multiple contemplation**
- **unitary contemplation**
- **infallible state of pure meditation**
- **cessation of activity**

त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम्॥४०॥

प्रथम तीन हो योग में, द्वी किसी एक योग।
तीसरा काय योग में, चौथा मिले अयोग॥९.४०.३४१॥

पहला शुक्ल ध्यान तीनों योगों में होता है। दूसरा तीनों में से किसी एक योग में होता है। तीसरा काय योग वाले के और चौथा अयोगी केवलियों के होता है।

Four type of pure meditation is soul with three activities, one activity, bodily activity and no activity respectively.

एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे॥४१॥

प्रथम दो श्रुत केवली, आश्रय एक विचार।
शुक्ल ध्यान सहित सदा, वितर्क और वीचार॥९.४१.३४२॥

आरंभ के दो शुक्लध्यान एक परिपूर्ण श्रुत केवली के ही होते हैं इसलिए दोनों का आश्रय एक ही है। वे वितर्क और वीचार सहित होते है।

The first two types of pure meditation is to scriptural knower and associated with contemplation and conceptual meditation.

अवीचारं द्वितीयम्॥४२॥

शुक्लध्यान एकत्ववितर्क, रहित रहे वीचार।
लेकिन होता है सवितर्क, जैन आगम विचार॥९.४२.३४३॥

एकत्ववितर्क शुक्लध्यान वीचार से रहित किन्तु सवितर्क होता है।

The second type of pure meditation is free from shifting.

वितर्कः श्रुतम्॥४३॥

श्रुत ज्ञान वितर्क कहा, तार्किक हो विचार।
विचार ही वितर्क है, श्रुत ज्ञान आधार॥९.४३.३४४॥

श्रुत ज्ञान को वितर्क कहते है। विशेषरुप से तर्क अर्थात् विचार करने को वितर्क कहते है।

Contemplation is scriptural knowledge.

वीचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसङ्क्रान्तिः॥४४॥

अर्थ व्यञ्जन योग बदल, कहलाता वीचार।
प्रथम शुक्ल ध्यान हो, शेष नहीं वीचार॥९.४४.३४५॥

अर्थसंक्रान्ति, व्यञ्जनसंक्रान्ति और योगसंक्रान्ति को वीचार कहते है। यह वीचार मात्र प्रथम शुक्ल ध्यान में होता है।

Conceptual meditation is with regard to object, words and activities.

सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशम
कोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः
क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः॥४५॥

क्रम से असंख्यात गुणा, रहे निर्जरा जान।
सम्यग्दृष्टि, श्रावक हो, विरतमुनि का ज्ञान॥
संयोजन अनन्तानुबंधी, क्षय हो दर्शन मोह।
उपशम श्रेणी जो चढे, उपशान्त हो मोह॥
क्षपक श्रेणी मुनि चढे, क्षीणमोह हो जाय।
जिनेन्द्र देव की निर्जरा, उत्तरोत्तर बढ जाय॥९.४५.३४६॥

सम्यग्दृष्टि पंचमगुणस्थानवर्ती श्रावक, विरत मुनि, अनन्तानुबंधी का विसंयोजन करने वाला, दर्शन मोह का क्षय करने वाला, उपशमश्रेणी चढ़ने वाले, उपशान्तमोह, क्षपकश्रेणी चढ़ने वाले, क्षीणमोह और जिनेन्द्र देव इन सब के प्रति समय क्रम से असंख्यातगुणा निर्जरा होती है।

The dissolution of karma increases innumerable fold from stage to stage from right believer, the householder with partial vows, the ascetic with great vows, the separator of passions, the destroyer of faith deluding karmas, the saint

with quiescent passions, the destroyer of delusion, the saint with destroyed delusion and spiritual victor.

पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रनथा:॥

पाँच भेद निर्ग्रन्थ मुनि, पुलाक बकुल कुशील।
निर्ग्रन्थ व स्नातक भी, मुनि है संयमशील॥ ९.४७.३४८॥

पाँच प्रकार के निर्ग्रन्थ है।

1. पुलाक
2. बकुश
3. कुशील
4. निर्ग्रन्थ
5. स्नातक

Passionless saints are of 5 types

1. **Pulak**
2. **Bakus**
3. **Kisila**
4. **Nirgrantha**
5. **Snataka**

संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पत: साध्या: ॥४७॥

संयम, श्रुत, प्रतिसेवना, तीर्थ, लिंग भी जान।
मुनि भेद लेश्या करे, उपपाद और स्थान॥९.४७.३४८॥

निम्न आठ प्रकार से पुलाकादि मुनियों में भेद है।

1. संयम
2. श्रुत
3. प्रतिसेवना
4. तीर्थ
5. लिंग
6. लेश्या
7. उपपाद
8. स्थान

Previously mentioned Pulaka etc saints can be differentiated with following 8 differences.

1. **self restraint**
2. **Scriptural knowledge**
3. **Transgression**
4. **Period of tirthankara**
5. **The sign**
6. **The colouration**

7. Birth

8. Place.

Chapter 10 - Liberation- मोक्ष

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम्॥१॥

मोह का हो क्षय प्रथम, फिर क्षय तीनों साथ।
ज्ञानदर्शन आवरण, अन्तराय नहीं हाथ॥१०.१.३४९॥

मोहनीय कर्म के क्षय से व ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्म के एक साथ क्षय होने से केवल ज्ञान प्रकट होता है।

Perfect knowledge is attained by destruction of deluding karma first and destruction of knowledge covering karma, faith covering karma and obstructive karma simultaneously.

बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः॥२॥

मोक्ष क्या है जानिये, कारण बंध अभाव।
निर्जरा भी पूर्ण हो, हो सब कर्म अभाव॥१०.२.३५०॥

बंध के कारणों का अभाव तथा निर्जरा से समस्त कर्मों का पूर्णतः अभाव हो जाना ही मोक्ष है।

Moksha is attained by absence of reasons of bondage and shedding of karmas completely.

औपशमिकादिभव्यत्वानां च॥३॥

उपशमिक क्षायोपशमिक, औदयिक ना भाव।
भव्यत्व का भी भाव ना, मोक्ष पूर्ण अभाव॥१०.३.३५१॥

जीव के औपशमिकादि भाव तथा भव्यत्व भाव का मोक्ष में अभाव होता है।

Liberated soul is devoid of subsidence of karma, subsidence and destruction of karma, rise of karma and worthy of liberation state.

अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः॥४॥

क्षायिक सम्यक्त्व रहे, केवल दर्शन ज्ञान।
सिद्धत्व भी साथ हो, अन्य भाव ना जान॥१०.४.३५२॥

मुक्त जीव के क्षायिक सम्यक्त्व, केवल ज्ञान, केवल दर्शन और सिद्धत्व इन भावों के अलावा अन्य भावों का अभाव हो जाता है।

Liberated soul to have infinite faith, infinite knowledge, infinite perception and infinite perfection.

तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात्॥५॥

तदनन्तर ऊर्द्धव गमन, मुक्त जीव की चाल।
अन्त लोक पहुँच कर, ठहरे अनन्तकाल ॥१०.५.३५३॥

तदनन्तर मुक्त जीव लोक के अन्त तक ऊपर जाता है।

Immediately after that soul rockets upto the end of lokakash.

पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बनधच्छेदात् तथागतिपरिणामाच्च॥६॥

पूर्व प्रयोग से जीव गमन, संगत होय अभाव।
टूटे बन्धन है सभी, ऊर्ध्वगमन स्वभाव॥१०.६.३५४॥

पूर्व प्रयोग से, संग का अभाव होने से, बन्धन के टूटने से और ऊर्ध्वगमन स्वभाव होने से मुक्त जीव ऊर्ध्व गमन करता है।

Their are 4 reasons of going to the top of lokakash:

1. **Impelling nature**
2. **Free from ties**
3. **Bondage is snapped**
4. **Nature of going upward.**

आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशि
खावच्च॥७॥

ज्यूँ कुम्हार का चक्र है, तुम्बी लेप न जान।
बीज एरण्डी उछलते, अग्नि चल आसमान॥१०.७.३५५॥

वह मुक्त जीव घुमाये गये कुम्हार के चक्के के समान, लेप से मुक्त तुम्बी के समान, एरण्ड के बीज के समान और अग्नि की शिखा के समान ऊर्ध्वगमन करता है।

Above 4 reasons explained with example:

1. **Potters wheel**
2. **Gourd devoid of mud**
3. **Castor seed when breaks up**
4. **Flame of fire.**

धर्मास्तिकायाभावात्॥८॥

शिष्य करता प्रश्न है, उमा स्वामी समझाय।
अलोक विचरण हो नहीं, नहीं धर्मास्तिकाय॥१०.८.३५६॥

वह मुक्त जीव धर्मास्तिकायका अभाव होने से लोकान्त से और ऊपर नहीं जाता।

It can’t go beyond lokakash because there is no medium of motion in alokakash.

क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहना
न्तरसंख्याबहुत्वतः साध्याः॥९॥

सिद्ध जीव के भेद है, क्षेत्र, गति और काल।
लिंग, तीर्थ, चारित्र भी, हरेक बुद्ध का जाल।
बोधित बुद्ध अनेक है, अवगाहन है ज्ञान।
अन्तर, संख्या, अल्पबहु, अन्तर यह पहचान॥१०.९.३५७॥

सिद्ध जीव के भेद:

- क्षेत्र
- काल
- गति
- लिंग
- तीर्थ
- चारित्र
- प्रत्येक बुद्ध बोधित
- ज्ञान
- अवगाहन
- अन्तर
- संख्या

- अल्पबहुत्व

- **The emancipated soul can be differentiated with reference to**
- **region**
- **Time**
- **State**
- **Sign**
- **Type of arhat**
- **Conduct**
- **Self enlightenment of enlightened by others**
- **Knowledge**
- **Stature**
- **Interval**
- **Number**
- **Numerical comparison**